वर्ष – 2025 अंक – दसवाँ

अंकुर

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली

केवल विभागीय वितरण हेतु

राष्ट्रीय हिंदी दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
हिंदी भाषा अनेकता में एकता को स्थापित करने की सूत्रधार है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

'अंकुर पत्रिका परिवार'

संरक्षक

श्रीमती अमन दीप चट्ठा

अपर उप-नियंत्रक महालेखापरीक्षक

प्रधान संपादक

श्री करन वोहरा

निदेशक

(प्रशासन/राजभाषा)

संपादक

श्री संजीव

सहायक निदेशक

राजभाषा

राजभाषा सहयोगी

श्री नवीन कुमार

लेखापरीक्षक

मुद्रक

कार्तिक ग्राफिक एण्ड डिजाईनर

नोट : रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। अतः रचनाओं में प्रकट भाव, दिये गए तथ्यों, संदर्भों तथा मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

पत्रिका का मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

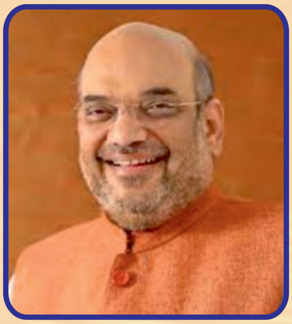

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संरक्षक का संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका “अंकुर” के दसवें अंक का विमोचन करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं, पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन की सार्थकता और सफलता की यात्रा का श्रेय पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों और विशेषकर रचनकारों को देते हुए उनके बहुमूल्य योगदान के लिए प्रशंसा करती हूँ। पत्रिका में समाहित पठनीय सामग्री, सूचनाप्रद एवं उपयोगी है।

आशा है कि यह पत्रिका कार्यालय के कर्मियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहित करेगी और रचनाकारों की अभिव्यक्ति को सार्थक मंच प्रदान करती रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

अमन दीप चट्ठा
अपर उप-नियंत्रक महालेखापरीक्षक
(केन्द्रीय प्राप्ति)
नई दिल्ली

शुभकामना संदेश

राजभाषा की प्रगति की दिशा में कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के दसवें अंक की बहुत शुभकामनाएँ । यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति एक सार्थक प्रयास एवं पत्रिका की रचनाएं हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम का प्रतीक हैं ।

पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं इस बात का भी प्रमाण हैं कि कार्यालय में अनेक साहित्यिक व लेखन प्रतिभाएं हैं ।

इस अवसर पर पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, रचनाकारों के योगदान की सराहना करता हूँ ।

आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार अपना सक्रिय योगदान देते रहेंगें ।

करन वोहरा
निदेशक / राजभाषा
(केन्द्रीय प्राप्ति)

शुभकामना संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 10वें अंक के प्रकाशन की आप सभी को बधाई।

यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी प्रेम एवं रुचि का प्रतीक है। पत्रिका की रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। हिंदी के प्रचार में यह पत्रिका एक अच्छे प्रयास के रूप में कार्य कर रही है।

मैं, पत्रिका की सफलता व उन्नति की कामना करते हुए सभी रचनकारों को धन्यवाद देती हूँ।

डॉ. ज्योति चौरसिया
निदेशक
जी.एस.टी./क्षे.क्ष.नि.एवं ज्ञा.के.

शुभकामना संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "अंकुर" के दसवें अंक के प्रकाशन पर अनेक शुभकामनाएँ। यह हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय के कार्मिक 'अंकुर' पत्रिका के माध्यम से हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

हिंदी राष्ट्र की राजभाषा है अतः हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के लिए प्रयास करना हम सभी का नैतिक दायित्व है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा हिंदी की सेवा करके अपने दायित्व का निर्वहन करती रहेगी।

राजभाषा की प्रगति एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

कृष्ण प्रताप सिंह
उप-निदेशक (आयकर)

संपादकीय

प्रिय पाठकों........................

राजभाषा हिंदी की सेवा एवं उसके प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित इस कार्यालय की पत्रिका "अंकुर" के 10वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है । वास्तव में यह पत्रिका कार्यालय महालेखापरीक्षक (केन्द्रीय प्राप्ति) नई दिल्ली में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सक्रिय रचनात्मक सहयोग का ही प्रतिफल है । इसकी विशेषता यह है कि इसमें कविताएँ, कहानियाँ, स्वास्थ्यवर्धक लेख व चित्र तथा वर्तमान के विषयों के लेख हैं, जो विशेषतौर पर पाठकों को पढ़ने के लिए उनका ध्यान आकर्षित करते है । "अंकुर" पत्रिका राजभाषा हिंदी के विकास में इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जोड़ कर रखती है । राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे विभागीय पत्रिकाओं के सराहनीय एवं अभूतपूर्व योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए कम है । अतः "अंकुर" के सभी रचनाकारों, सुधि पाठकों एवं उच्चाधिकारियों को मैं उनके सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

भाषा ही आपसी विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है । यह जितनी सरल और सुबोध होगी संप्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होगा । राजभाषा के निरंतर बढ़ते कदम इस बात के साक्ष्य हैं कि वह दिन अब दूर नहीं जब हम सभी चिन्तन, मनन व संप्रेषण का कार्य अपनी मातृभाषा में करके गौरवान्वित महसूस करेंगें ।

हम अपने सभी पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि "अंकुर" पत्रिका का दसवाँ अंक भी हमेशा की भांति आपकी आकांक्षाओं एवं अभिलाषाओं पर खरा उतरेगा । इसकी रचनाएँ न केवल रोचक, ओजपूर्ण हैं अपितु ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद भी हैं ।

अंत में "अंकुर" के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं इसके विविध कार्यों से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूँ तथा पाठकों से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि आप अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमारा मार्गदर्शन करें ताकि भविष्य में भी पत्रिका में और नवीन आयामों को जोड़कर इसे और श्रेष्ठ बनाने हेतु प्रयासरत रहें ।

राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित !

संजीव
सहायक निदेशक / राजभाषा
संपादक

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान: निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शुभकामना संदेश		पृ.सं.
	माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश		
1.	संरक्षक का संदेश	माननीय अपर उप-नियंत्रक महालेखापरीक्षक महोदया	3
2.	प्रधान संपादक का संदेश	निदेशक (प्रशासन/राजभाषा)	4
3.	शुभकामना संदेश	निदेशक / जी.एस.टी./क्षे.क्ष.नि.एवं ज्ञा.के.	5
4.	शुभकामना संदेश	उप-निदेशक / आयकर	6
5.	संपादकीय	श्री संजीव / सहायक निदेशक / राजभाषा	7
6.	राजभाषा प्रतिज्ञा	---	8
	लेख, कविताएँ एवं कहानियाँ		
	रचना का नाम	**रचनाकार**	
7.	मेरी तीसरी तिरुपति यात्रा	श्री शिवम् द्विवेदी, स ले प अ, ग्वालियर शाखा	10
8.	कांवड़ यात्रा : एक सार्थक महिमा	श्री संदीप कुमार पाण्डेय, स.ले.प.अ.	13
9.	"पिताजी" - 'कभी रिटायर नहीं होते'	श्री राजेश कुमार, व.ले.प.	16
10.	फूटा हुआ घड़ा - कहानी	श्री राजेश कुमार, व.ले.प.	19
11.	चित्र	कुमारी लक्षिता सुपुत्री श्रीमती प्रियंका सिंह, व.ले.प.	21
12.	चित्र	कुमारी लावण्या सुपुत्री श्री हरीश चन्द्र, एम टी एस	21
13.	बंदगी - शायरी	श्रीमती अमन दीप चट्ठा, माननीय ए. डी. ए. आई.	22
14.	संगीत - कविता	श्रीमती नेहा, लेखापरीक्षक	23
15.	नीट परीक्षा : एक मृगमरीचिका	श्री चन्द्र शेखर कु. गुप्ता, सहायक पर्यवेक्षक	24
16.	डर्टी वेलनेस	श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.	27
17.	"प्रकृति" - हमारी सबसे बड़ी संपत्ति	श्री हरीश चन्द्र, एम टी एस	29
18.	सावन - कविता	कुमारी लावण्या सुपुत्री श्री हरीश चन्द्र, एम टी एस	30
19.	ग्रीन हाइड्रोजन समित 2025 - भारत की उर्जा क्रांति की ओर एक कदम....	श्रीमती सुभा भारती पत्नी श्री संदीप बरनवाल, ले.प.	31
20.	शौक : सफल जीवन की सीढ़ी - लेख	श्री हरीश चंद्र पाण्डेय, वरि. लेखापरीक्षक	33
21.	ऋषिकेश - हरिद्वार सड़क यात्रा	कुमारी अनाया जोशी सुपुत्री श्री आदित्य जोशी, सहायक पर्यवेक्षक	35
22.	"पापा - मेरी सारी दुनियाँ" - लेख	कुमारी हिमांशी, एम. टी. एस.	37
23.	जीवन एक अर्थ - कविता	श्री अनिल कुमार, लेखापरीक्षक	38
24.	चित्र	मास्टर विहान सुपुत्र श्री राजेश कुमार, व ले प	39
25.	गंगा : तेरा पानी अमृत - लेख	श्रीमती शशि सिंह, व ले प	40
26.	मम्मी और पापा - कविता	कुमारी निधिका मीना, लेखापरीक्षक	42
27.	स्क्रीन टाइम - लेख	श्री ऋषि आहूजा H/o श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.	43
28.	भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव	श्री सौरभ मीणा, लेखापरीक्षक	46
29.	घर जाना ख़्वाब लगता है - कविता	श्रीमती नेहा, लेखापरीक्षक	49
30.	चलो नया सवेरा ढूंढे - कविता	श्रीमती सुभा भारती पत्नी श्री संदीप बरनवाल, ले.प.	51
31.	मेरे पापा - कविता	कुमारी हिमांशी, एम. टी. एस.	52
32.	बस हिम्मत कर बढ़ते रहना - कविता	श्रीमती चंचल पत्नी श्री प्रमोद कुमार आर्य,स.ले.प.अ.	53
33.	कार्यालय से सेवानिवृत्त अधिकारीयों एवं कर्मचारियों की सूची एवं श्रद्धांजलि		54 - 55

मेरी तीसरी तिरुपति यात्रा

मैंने अपनी पहली तिरुपति यात्रा का विवरण पूर्व में इसी पत्रिका में किया था और उस अनुभव के बाद न जाने क्यों मेरा मन उसी दिशा की ओर हमेशा लगा रहता है और इसी क्रम में मैं विगत 3 वर्षो में तीसरी बार तिरुपति दर्शन के लिए चला गया| 'तिरुपति' नाम सुनते ही पता नही ऐसा क्या जादू हो जाता है कि मैं खुद को रोक नही पाता| आप मेरा पिछला लेख पढ़ेंगे तो पाएँगे कि मैंने कुछ बिंदु चिंतन एवं विचार हेतु पाठको के लिए छोड़ दिए थे और मैंने एक अपील भी की थी कि सभी श्रद्धालुओ को अपने जीवन काल में एक बार इस पवित्र मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन अवश्य करने चाहिए| आपको तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (TTD) ट्रस्ट, तिरुमाला की कार्यशैली, उनके व्यवस्थापन और प्रबन्धन के तरीको का अवश्य अध्ययन करना चाहिए|

मैं अपने इस यात्रा वृत्तान्त का अनुभव यहीं से प्रारम्भ करूंगा| इस बार वर्ष 2025 के जून के महीने में, भयंकर गर्मी का मौसम ग्वालियर में, और मुझे एकदम से अंतर्मन से प्रस्फुटन हुआ कि चलो तिरुपति चलते है| तिरुपति चलने के बारे में सोचना और चल पड़ना, दोनों में बहुत अंतर्कलह है और कई बार तो सोचने वाला अंग जीत भी जाता है लेकिन मेरे साथ ये विडंबना नही थी क्योंकि मेरा विश्वास इस मन्दिर के प्रति कुछ अलग ही है| मैंने केरला एक्सप्रेस [जो ग्वालियर से तिरुपति के बीच चलने वाली सबसे तेज गति की ट्रेन है और सबसे कम समय (मात्र 28 घंटे) में तिरुपति तक की दुरी तय कर लेती है] से अपना आने जाने का टिकेट कन्फर्म किया| फिर क्या, मैंने अपनी टिकट ली और बैठ गया अपनी सीट पर| ट्रेन में भीड़ भारतीय परम्परा अनुसार अपनी शैली में उपलब्ध थी और अब शुरू हुआ, मेरा सफ़र रात में 12:30 बजे जो कि खत्म होना था अगले दिन सुबह 5 बजे|

इतनी लम्बी यात्रा में यात्रा से जुड़े अनुभव बहुत अलग प्रकार के होते है जिनका वर्णन करना भी असंभव है, तब भी मैं कुछ तो साझा करूँगा जो मुझे बहुत अच्छा और सुखद प्रतीत हुआ| ट्रेन में कार्यरत वेंडर जो इस लम्बी दुरी की ट्रेन में सेवा देते है, वे ट्रेन के परिचालन के हिसाब से अपनी भाषा और बोलचाल भी बदलते रहते है जैसे यात्रा में साधारण बातचीत हिंदी से प्रारंभ होती है और फिर तेलुगु, तमिल से होते हुए मलयालम में समाप्त होती है, ऐसा मैं इसलिए कह पाता हूँ क्योंकि मेरी वापसी की यात्रा भी इसी ट्रेन से थी|

ट्रेन के तिरुपति स्टेशन पहुचते ही मैंने भगवान श्री वारी वेंकटेश्वर (श्रीनिवासा गोविंदा) का ध्यान किया और अब शुरू हुई मेरी धार्मिक यात्रा और इस यात्रा में चलते चलते मैं अपने पुराने अनुभवों को भी तरोताज़ा कर रहा था| प्लेटफार्म संख्या एक से बाहर निकल कर, APSRTC की बस में तिरुपति से तिरुमाला, जो कि करीब 25 कि.मी. दूर है, के आने - जाने का पूर्वनिर्धारित टिकट जो कि 160 रु. का था, मैंने ले लिया| आप इस टिकट में यात्रा के दिन से अगले तीन दिन के अन्दर वापसी की यात्रा कर सकते है|

बस के द्वारा, मैं सुबह 6 बजे तिरुमाला पहाड़ी पर बने बस स्टैंड पर पहुँच गया और वहाँ से मैंने बाल दान करने वाले कक्ष में प्रवेश किया| मुझे ट्रस्ट के द्वारा एक टोकन तथा ब्लेड प्रदान की गई| मैं टोकन में अंकित हॉल और नाई के समक्ष पहुच गया| नाई ने मुझे कहा, बोलिए 'गोविंदा', मैंने कहा 'गोविंदा', और मेरे सारे बाल क्षण भर में मेरे सिर से अलग हो चुके थे| यह अनुभव अपने आप में बिलकुल अद्भुत रहता है| यहाँ मैं बताना चाहूँगा कि भगवान तिरुपति मन्दिर में आने वाले अधिकतर श्रद्धालु (पुरुष और महिला) अपने बाल दान कर देते है और यह यहाँ की अद्भुत परम्परा है| बाल दान करने के बाद स्नान उपरांत मैंने अपने लक्ष्य सर्वदर्शनम् (फ्री दर्शन) की ओर प्रस्थान किया और अब बज रहे है सुबह के 8 |

अब मैं पहुँच गया हूँ सर्वदर्शन की लाईन में, और वहाँ पर पुरे भारत के भांति-भांति की विविधता के लोग जो भगवान के दर्शन हेतु पधारे थे, मस्ती में आगे बढ़ रहे थे| कुछ सपरिवार थे, तो कुछ दोस्तों के साथ थे, कुछ ग्रुप टूर कर रहे थे तो कुछ मान्यताओ के वशीभूत अपनी यात्रा पूर्ण कर रहे थे| मैंने पाया है कि तमिल और तेलुगु लोगो के लिए इस मन्दिर का विशेष महत्त्व है और वे अपने मन में विशेष श्रद्धा रखते है| ऐसी ही लाईन में चलते फिरते, खाते पीते मैं पंजीकरण के लिए निर्धारित काउंटर पर पहुँच गया, जहाँ पर प्रति सेकंड कम से कम 20 श्रद्धालुओ का पंजीकरण हो रहा था और वहीं पर यात्रियों का सामान भी जमा किया जा रहा था| मुझे 23192 नम्बर मिला और वैकुण्ठ क्यू कोम्प्लेक्स (VQC) के हॉल संख्या 2 के कक्ष संख्या 21 में भेज दिया गया और अब दोपहर के 4 बज गये थे|

पाठको, इस हॉल में पहूँचने का अर्थ है कि अब आपको दर्शन शीघ्र अथवा निश्चित तौर पर हो जाएँगे| दर्शन की प्रतीक्षा में भोजन उपरांत नींद आ गई और मैं सो गया| यहाँ यह बताना अति आवश्यक है कि TTD ट्रस्ट, मन्दिर आने वाले श्रद्धालुओ के लिए भोजन, चाय, शुद्ध पानी इत्यादि की उत्तम व्यवस्थाएं निर्धारित समय पर आयोजित करता है| रात के 11 बज रहे थे और हाल एकदम जयकारो से गूंज उठा| यह शोर मेरे लिए पहली बार की यात्रा में आश्चर्यजनक था किन्तु अब मुझे इसका अनुभव हो चुका था और मैं समझ गया था कि अब जल्दी दर्शन हो जाएँगे| हाल के गेट खोल दिए गये थे, हम सभी श्रद्धालु गोविंदा गोविंदा जयघोष के साथ आगे बढ़ रहे थे| मंदिर के मुख्य द्वार (मंडपम) से प्रवेश, तुलाभारम का दर्शन, श्री वारी ध्वज्स्तम्भ के दर्शन और उसके उपरांत अपने वैकुण्ठ रूपी दरबार में विराजित, जय और विजय रूपी द्वारपालों की सुरक्षा में विराजित भगवान श्री वारी वेंकटेश्वर (साक्षात् श्री विष्णु) के दिव्य दर्शन हुए| इस प्रतिमा का दर्शन अपने आप में अलौकिक है और हर बार की तरह मैं इस अनुभव का वर्णन करने में असमर्थ हूँ | बस यहीं कह सकता हूँ कि आप जितना देखेंगे उतना ही मोहित होते जाएँगे|

दर्शन उपरांत भगवान के गर्भ गृह की परिक्रमा करते हुए आप भगवान की हुंडी की और बढ़ते है और इच्छा अनुसार दान कर सकते है| यदि आप भगवान वेंकटेश्वर की कथा का अध्ययन करेंगे तो पाएँगे कि इस मंदिर से जुडी हर परंपरा की कई आस्था भरी कहानियाँ है इसके लिए आप यूट्यूब पर उपलब्ध कन्नड़ सिनेमा द्वारा निर्मित 'श्री निवासा कल्याण' फिल्म देख सकते है जिससे आप इस मन्दिर से जुड़ी कालजयी कथा को जान सकते है|

इस फिल्म को देखने में आपको कोई परेशानी नही होगी और अत्यंत सहजता से आपको इस सिद्ध मंदिर का सम्पूर्ण महात्म्य समझ आ जाएगा| हुंडी दान उपरांत आपको मंदिर पुरोहित द्वारा प्रसाद प्रदान किया जाता है और आप आगे बढकर लड्डू केंद्र से विश्व प्रसिद्ध तिरुपति लड्डू प्राप्त कर सकते है| अभी कुछ दिन पहले ये लड्डू विवादों में था| इसकी शुद्धता को लेकर बहुत विवाद हुए थे किन्तु TTD प्रशासन द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए इस विवाद को समाप्त कर, मंदिर से जुडी आस्था और विश्वास को बनाये रखा और श्रद्धालु भी अपनी आस्था अनुसार लड्डू की जमकर खरीदारी करते है|

इतने प्रयोजन उपरांत यात्रा संफल रही और अब जैसा मैंने आपको बताया कि मेरे पास वापसी का टिकट पहले से था तो फिर क्या मैं बैठ गया तिरुमाला से चलने वाली पहली बस में जो भोर में 3 बजे चल पड़ी और मैं प्रातः 4 बजे तिरुपति स्टेशन पहूँच गया| इसके बाद कुछ देर में आई केरला एक्सप्रेस में अपनी सीट पर बैठ गया और प्रारम्भ हुई यात्रा घरवापसी की| वापसी की यात्रा 30 घंटे बाद मुझे ग्वालियर ले आई और उसके बाद स्टेशन से घर लौटते समय ग्वालियर में ज़बरदस्त बारिश हुई और इस बारिश में मैं जम कर भीगा और ऐसा लगा कि गोविंदा नाम की वर्षा मेरा तन मन को भिगो कर पवित्र कर रही है|

कभी - कभी तो मन करता है कि तिरुपति मन्दिर में यदि मेरा मन इतना ही बस रहा है तो क्या, शायद ईश्वर की ये कोई प्रेरणा है या फिर मेरा कोई पूर्व का नाता है इस पवित्र मन्दिर से| हालाकि इस सब के बारे में सोच पाना मुझ मूढ़ प्राणी के लिए तो असंभव ही है क्योकि ये सब उस परमपिता की सुंदर लीला है, जिसका कोई सानी नही है| एक बार पुनः मेरा सभी से अनुरोध है कि तिरुपति मंदिर के दर्शन जीवन में एक बार अवश्य करे| श्री वारी भगवान वेंकटेश्वर मुझे पुनः अपनी शरण में बुलाए इसी आशा के साथ आप सभी से ....

गोविंदा ! गोविंदा !

श्री शिवम् द्विवेदी
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

कांवड़ यात्रा : एक सार्थक महिमा

श्री संदीप पाण्डेय
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदू कैलेंडर के पांचवे महीनें अर्थात श्रावण (सावन) मास में हम सभी साक्षी बनते हैं आस्था की एक अद्भुत यात्रा के, जो शिव भक्तों की परम श्रद्धा का सर्वमान्य प्रतीक होने के साथ ही उनके संकल्प, साधना एवं समर्पण की कथा है। जैसा कि विदित हो गया होगा, हम बात कर रहे हैं "कांवड़ यात्रा" की।

हर साल जैसे ही सावन का महीना प्रारंभ होता है वैसे ही देश के अलग-अलग सुदूरवर्ती स्थानों से लाखों-करोड़ों शिव भक्त 'बोल बम' के जयकारों के साथ कांवड़ यात्रा पर निकल पड़ते हैं। इन शिव भक्तों को 'कांवड़िया' या 'भोले' कहा जाता है। ये कोई साधारण यात्रा नहीं है बल्कि एक आस्था, विश्वास और तपस्या से जुड़ी परम्परा है जो संभवत: हजारों वर्षों से अनवरत चली आ रही है। सावन में वर्षा की हर बूँद जैसे शिवभक्तों को पुकारती हो कि चलो अपने भोलेबाबा को गंगाजल अर्पित किया जाए। इस कांवड़ यात्रा के दौरान पूरा वातावरण ही शिवमय हो जाता है।

आइये, पहले समझते हैं कि कांवड़ यात्रा है क्या और इस परम्परा की उत्पत्ति कब और कहाँ से हुई ? शिवभक्त गंगा नदी या अन्य पवित्र नदियों से जल भरते हैं और उसे कन्धे पर रखी बाँस (लकड़ी) की बनी कांवड़ में लटकाकर सैकड़ों किलोमीटर चलकर अपने-अपने गांवों-शहरों के शिव मंदिरों तक पैदल यात्रा करते हैं। इस जल से महाशिवरात्रि के दिन (श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि) वो भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं। यह पूरी प्रक्रिया मात्र एक धार्मिक कर्तव्य नहीं है बल्कि मानसिक एवं शारीरिक समर्पण का प्रतीक भी है। अब समझते हैं कि इस अद्वितीय परम्परा की उत्पत्ति कहाँ से हुई। कांवड़ यात्रा की शुरूआत पौराणिक काल से मानी जाती है और इसका संबंध समुद्र मंथन की कथा से है। जब देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो उसमें से एक विष निकला जिसे 'हलाहल' कहा गया। यह विष इतना ज़हरीला था कि पूरी सृष्टि का विनाश हो सकता था। इस संकट की घड़ी में सभी देवतागण और असुर भगवान शिव की ओर आस लिए कातर दृष्टि से उपस्थित हुए। इस समय भगवान शिव नें इस 'हलाहल विष' को पीकर सृष्टि की रक्षा की। उन्होंने इस विष को अपने गले में ही रोक लिया, जिससे उनका गला (कंठ) नीला पड़ गया और वे 'नीलकंठ' कहलाए। विष के प्रभाव को समाप्त करने के लिए देवताओं और मुनियों ने उन्हें गंगाजल अर्पित किया। इसी परम्परा को शिवभक्तों नें कालान्तर में आत्मसात किया और आज यह कांवड़ यात्रा के रूप में हमें दिखाई पड़ती है।

कांवड़ यात्रा से जुड़ी मान्यताएं एवं अन्य प्रचलित कथाओं की श्रृंखला में रावण की कथा का भी महत्व है। पौराणिक मान्यता एवं लोकप्रिय धारणा के आधार पर रावण ने भगवान शिव की तपस्या की और उनका विष शांत करने के लिए कांवड़ में गंगाजल भरकर बागपत (उत्तर प्रदेश) के पास पुरामहादेव में

उनका अभिषेक किया था। इस प्रकार यह यात्रा रावण के समय से प्रचलन में मानी जाती है। इसी प्रकार कांवड़ यात्रा के संदर्भ में भगवान परशुराम की कथा प्रसिद्ध है जिन्हें सबसे पहला कांवड़िया माना जाता है। इन्होंने गढ़मुक्तेश्वर से पवित्र गंगाजल लाकर पुरामहादेव में भगवान शिव का जलाभिषेक किया था। इसी प्रकार एक और प्रसिद्ध कथा में भगवान श्रीराम का संबंध भी इस अनूठी यात्रा से बताया गया है। मान्यता यह है कि भगवान श्रीराम ने सुल्तानगंज से गंगाजल भरकर देवघर में बाबा बैद्यनाथ धाम (देवघर) में शिवलिंग का जलाभिषेक किया था। इस कारण से भगवान श्री राम को भी कांवड़ यात्रा का अग्रणी रूप माना जाता है। इसी क्रम में जनमानस श्रवण कुमार की कथा का भी उल्लेख करते हैं। वर्णन कुछ इस प्रकार से है कि श्रवण कुमार अपने वृद्ध एवं नेत्रहीन माता-पिता को कांवड़ में बैठाकर तीर्थयात्रा हेतु हरिद्वार ले गए थे ताकि वो गंगास्नान कर सकें। तत्पश्चात् उन्होंने हरिद्वार से ही गंगाजल लाकर भगवान शिव का जलाभिषेक किया। इस कारण से कुछ लोग उन्हें भी कांवड़ियों का अग्रज मानते हैं।

आगे चर्चा करते हैं कांवड़ यात्रा के प्रकारों की, जो कि कई रूपों में देखने को मिलती है। भक्त की निष्ठा और संकल्प के अनुसार कांवड़ यात्रा को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत कर सकते है:-

1. सामान्य कांवड़- इसमें भक्त जहाँ चाहे वहाँ विश्राम कर सकते हैं, बस इस दौरान जल को जमीन या सड़क पर न रखकर किसी स्टैण्ड पर रखा जाता है। मूल उद्देश्य यह है कि जल किसी भी प्रकार से अपवित्र न हो।

2. डाक कांवड़- इसे सबसे कठिन यात्रा माना जाता है। इसमें भक्तगण गंगा से जल लेकर निर्धारित समय के भीतर मंदिर तक पहुँचते हैं। इसमें दौड़ते हुए ही जल लाने का नियम है तथा पूरी यात्रा के दौरान जल का पात्र जमीन को स्पर्श नहीं करता।

3. झाँकी कांवड़- इसमें भक्त बड़ी-बड़ी झाँकियों के साथ चलते हैं जो कि आकर्षक रूप से सजी होती हैं तथा इनमें शिवजी या शिवलिंग की मनोहर छवि प्रस्तुत की जाती है। फूलों और रोशनी संगीत से सजी ये संगीतमय झाँकियाँ देखने के लिए कांवड़ पथ पर जगह-जगह शहरों / गांवों के लोगों की भीड़ इकट्ठा होती है।

4. दंडवत कांवड़- इसमें भक्त दंडवत प्रणाम करते हुए चलते हैं तथा यह समय-साध्य, श्रम-साध्य एवं संकल्पबद्ध यात्रा है जो समान्यत: छोटी दूरी के लिए ही की जाती है।

5. खड़ी कांवड़- यह अत्यंत जटिल यात्रा है क्योंकि इसमें कांवड़ को गंगा से लेकर मंदिर तक एक भी बार धरती पर नहीं रखा जाता। आमतौर पर यह यात्रा जोड़े में की जाती है और एक के थकने पर दूसरा यात्री कांवड़ उठा लेता है। इसमें कांवड़ को लगातार कंधे पर उठाए रखना शारीरिक रूप से एक बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है।

आज के परिदृश्य में यदि बात करें तो यह यात्रा एक विशाल धार्मिक उत्सव में बदल चुकी है, विशेष रूप से आवागमन के साधन एवं बेहतरीन सड़क-हाइवे व्यवस्था के कारण यह एक महान आयोजन का रूप

ले चुकी है जिसमें लाखों कांवड़िये हरिद्वार, गंगोत्री, गोमुख, सुल्तानगंज जैसे स्थानों से गंगाजल लेकर बाबा बैद्यनाथ, काशी विश्वनाथ, पुरामहादेव, नीलकंठ महादेव आदि पवित्र शिव धामों में जलाभिषेक करते हैं। पूरे कांवड़ पथ पर जगह-जगह भंडारे (भोजन की व्यवस्था), जलपान, चिकित्सा तथा विश्राम की उचित व्यवस्था सरकार, दानी व्यक्तियों तथा सामाजिक संस्थाओं, आदि द्वारा की जाती है। यह यात्रा सामाजिक आर्थिक समरसता का भी प्रतीक है जिसमें हर आय वर्ग (जैसे डॉक्टर, व्यवसायी, सरकारी सेवक, छोटे कार्मिक) व हर जाति वर्ग व धर्म के लोग पूर्ण आत्मीयता के साथ बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं तथा सेवा प्रदान करते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक परम्परा की प्रगाढ़ता भी है कि जिसमें अन्य धर्मावलम्बी भी भाग लेते हैं व सेवाभाव से पण्डाल लगाकर अल्पाहार, जल, शिकंजी-शर्बत आदि से योगदान करते हैं।

आध्यात्मिक महत्व की बात की जाए तो कांवड़ यात्रा सिर्फ पैदल चलने या शारीरिक कठिनाइयों से दो चार होने का नाम नहीं है बल्कि यह एक तपस्या तथा भावनात्मक संकल्प है जिसमें शरीर अवश्य ही थक सकता है पर सच्चे शिवभक्त की आत्मा नहीं। पूरे मार्ग में लगने वाले सेवा-शिविर, लंगर, दवाओं की व्यवस्था एवं जनसहयोग भक्तों की आस्था को और भी पुष्ट करते हैं। 'बोल बम', 'भोले-भोले', 'हर-हर महादेव' के जयकारों के साथ गुंजायमान वातावरण मानो ऐसा लगता है कि रास्ता ही मंदिर बन गया हो। इस यात्रा में भक्त मात्र एक यात्री नहीं होता बल्कि एक साधक, सेवक और प्रभु-प्रेमी होता है अपने भगवान श्री भोलेनाथ का । यह एक ऐसी यात्रा है जो स्वयं में एक तीर्थ है। यह भक्ति, सहनशीलता और एकता का पर्व है जो दर्शाती है कि कैसे प्रचीन आध्यात्मिक परम्पराएं समय के साथ और भी प्रगाढ़ होती जाती हैं। कांवड़ यात्रा को चाहें पौराणिक कथाओं की पुनरावृत्ति कहें या आत्मशुद्धि का साधन, यह भगवान शिव के प्रति अटल विश्वास और अटूट श्रद्धा की एक असाधारण जीवंत गाथा है जो कभी थकती व रूकती नहीं, क्योंकि यह केवल कदमों से नहीं बल्कि अंतरात्मा के दृढ़ विश्वास से चलने वाली यात्रा है - बोल बम-हर हर महादेव-बम भोले।

****

प्रासंगिक तथ्य: बारह ज्योतिर्लिंग भारत में भगवान शिव के प्रतिष्ठित पवित्र स्थलों में से हैं। इन ज्योतिर्लिंगों का महत्व हिन्दू धर्म में विशेष महत्व है।

1. **सोमनाथ** - सोमनाथ, गुजरात
2. **महाकालेश्वर** - उज्जैन, मध्य प्रदेश
3. **मांढलेश्वर** - मांढलेश्वर, मध्य प्रदेश
4. **काशी विश्वनाथ** -, उत्तर प्रदेश
5. **केदारनाथ** - केदारनाथ, उत्तराखंड
6. **भीमाशंकर** - पुणे, महाराष्ट्र
7. **रामेश्वर** - रामेश्वरम, तमिलनाडु
8. **नागेश्वर (दारुकाव)** - गोहिल, गुजरात
9. **कालेश्वर** - कालेश्वर, तेलंगाना
10. **महेश्वर** - महेश्वर, मध्य प्रदेश
11. **त्र्यंबकेश्वर** - त्र्यंबक, महाराष्ट्र
12. **घृष्णेश्वर** - एलोरा, महाराष्ट्र

ये सभी ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के महत्वपूर्ण अवतार हैं और हिन्दू धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यन्त श्रद्धेय स्थल हैं।

****

"पिताजी" - 'कभी रिटायर नहीं होते'

श्री राजेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"पिताजी अब रिटायर हो गए हैं..."
ये शब्द जितने साधारण लगते हैं,
उतनी ही बड़ी एक ग़लतफहमी
ख़ुद इस वाक्य में छुपी होती है।

क्योंकि सच्चाई ये है कि,
पिताजी कभी रिटायर नहीं होते।
न वक़्त से, न ज़िम्मेदारियों से।
न रिश्तों से, न फर्ज़ से।

नौकरी से रिटायर हो सकते हैं,
ऑफिस जाना बंद हो सकता है,
लेकिन ज़िम्मेदारियाँ...?
वो कभी खत्म नहीं होतीं।

जब बच्चे छोटे होते हैं, तो पिताजी घर चलाते हैं।
जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो पिताजी घर सम्भालते हैं।
जब बच्चे खुद बाप बन जाते हैं,
तब भी वो अपने पिताजी से सलाह लेते हैं...
क्योंकि "बाप", कभी सलाह से रिटायर नहीं होता।

बचपन में जब हम गिरते थे, माँ दौड़ती थी,
लेकिन पिताजी दूर से देखते थे।
क्योंकि उन्हें भरोसा होता था
कि अगर अब नहीं सीखा उठना,
तो ज़िंदगी इसे हर बार गिराएगी
और बच्चा हर बार किसी की ओर देखेगा।

उन्होंने हमें गिरने दिया...
लेकिन कभी गिरने नहीं दिया ज़िंदगी में।

कई बार लगता था कि पिताजी सख़्त क्यों हैं?
क्यों नहीं वो हमारे जैसे सोचते?
क्यों हर चीज़ में 'ना' ही सुनाई देती थी?

लेकिन आज जब ख़ुद ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं,
EMI भरनी होती है,
बिल देना होता है,
बच्चों के स्कूल की फीस से लेकर बूढ़े माँ-बाप की दवाइयों तक का हिसाब रखना होता है...
तब समझ आता है -
पिता की सख्ती दरअसल एक कवच होता है...
जो वो अपने बच्चों के भविष्य पर चढ़ा देता है।

पिता कभी थकते नहीं थे।
चाहे रात की शिफ्ट हो या दोपहर की धूप,
कभी अपनी हालत का ज़िक्र तक नहीं किया।

बेटा खांसी से परेशान हो, तो पूरा घर सिर पर उठा लेते थे,
लेकिन खुद बुखार में भी काम पर जाते थे...

क्यों?
क्योंकि पिताजी जानते थे
घर की नींव को खुद को मज़बूत रखना होता है,
दीवारों को हिलने नहीं देना होता।

आज जब हम उन्हें कुर्सी पर बैठे पाते हैं, चुपचाप खिड़की के बाहर देखते हुए,
तो लगता है कि वो अब "फ्री" हैं।
लेकिन नहीं...

अब भी उनके दिमाग़ में बस यही चलता है
"बेटा ठीक है ना?"
"पोता बड़ा हो रहा है, स्कूल की फीस कितनी होगी?"
"अब मेरा बेटा मेरे बिना ये सब कैसे मैनेज करता होगा?"

रिटायरमेंट उनके शरीर को मिलती है,
मन को नहीं।
सपने अब भी चलते हैं,
बस उनके नाम नहीं होते,
बच्चों के नाम से जुड़े होते हैं।

एक पिता कभी कहता नहीं -
"मुझे तुम्हारी ज़रूरत है"
वो बस दरवाज़े के पास बैठा इंतज़ार करता है
कि बेटा थोड़ी देर उसके पास बैठे,
थोड़ी बातें करे।

जब बच्चे पैसा कमाने लगते हैं, तो उन्हें लगता है कि अब वे पिताजी पर बोझ नहीं है।
पर सच्चाई यह है -
पैसा कभी भी पिताजी का स्थान नहीं ले सकता,
पिताजी की जगह हमेशा पैसे से ऊपर रहती है।

आज की पीढ़ी सोचती है कि मोबाइल में "रिटायर्ड" लिख दिया तो बस -
अब उनकी ज़िम्मेदारी खत्म।

पर क्या किसी बेटे ने कभी पूछा है
"पिताजी, अब आप क्या करना चाहते हो?"
"अब आपकी ख्वाहिशें क्या हैं?"
"जिन चीजों के लिए आपने ज़िंदगी भर इंतज़ार किया, क्या अब उन्हें जीना चाहोगे?"

अगर नहीं पूछा है, तो आज पूछिए।
आज बात कीजिए।
क्योंकि जिस दिन पिता चुप हो जाते हैं...
उस दिन घर में सबसे बड़ा सन्नाटा फैलता है।

पिता रिटायर नहीं होते।
वो बस एक दिन इतना थक जाते हैं,
कि मुस्कुराना भी छोड़ देते हैं।

उनके कंधे अब बोझ उठाने के काबिल नहीं रहते,
पर मन अब भी वही है -
जो चाहता है कि घर चलता रहे,
सब खुश रहें।

इसलिए अगली बार जब आप उन्हें एक कोने में बैठे हुए देखें,
तो मत समझिए कि वो अब "फ्री" हैं...
समझिए कि अब उन्हें हमारी "फिक्र" है।
और हमें उनकी "जरूरत"।

"पिता रिटायर नहीं होते,
वो बस उम्र के आख़िरी पड़ाव पर खड़े होकर
अपने बच्चों की ज़िंदगी को एक सफल मुसाफ़िर की तरह जाते हुए देखते हैं...
बिना कोई आवाज़ किए, बिना कोई शिकायत किए..."॥

फूटा हुआ घड़ा
एक शिक्षाप्रद कहानी

श्री राजेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक समय की बात है, एक गाँव में एक किसान रहता था। वह ईमानदार, परिश्रमी और सरल स्वभाव का था। उसका दिन बहुत सुबह शुरू होता था। रोज़ वह सूरज उगने से पहले ही उठ जाता और पास के एक झरने से पानी लेने के लिए निकल पड़ता। किसान के पास दो बड़े घड़े थे जिन्हें वह एक लकड़ी के डंडे के दोनों सिरों पर बाँधकर अपने कंधे पर रख लेता और झरने से पानी भरकर अपने घर लाता।

इन दोनों घड़ों में से एक बिल्कुल सही और मजबूत था, जबकि दूसरा घड़ा थोड़ा सा फूटा हुआ था। जब भी किसान झरने से पानी भरकर घर आता, तो एक घड़ा पूरा पानी पहुँचाता जबकि फूटा हुआ घड़ा रास्ते में पानी टपकाता जाता और घर पहुँचते-पहुँचते उसका आधा पानी खत्म हो जाता।

यह सिलसिला पिछले दो वर्षों से चल रहा था।

सही घड़े को इस बात पर बहुत गर्व था कि वह बिना किसी कमी के अपना पूरा काम करता है, जबकि फूटा हुआ घड़ा खुद को बहुत दोषी और शर्मिंदा महसूस करता था। वह हमेशा सोचता कि वह किसान की मेहनत को बेकार कर रहा है क्योंकि वह केवल आधा पानी ही पहुँचा पाता है।

एक दिन फूटे हुए घड़े से रहा नहीं गया। उसने किसान से बहुत ही दुःखी होकर कहा,
"मालिक, मुझे आपसे माफ़ी माँगनी है। मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। पिछले दो सालों से मैं अपना काम ठीक से नहीं कर पा रहा हूँ। मैं आधा पानी गिरा देता हूँ। मेरी वजह से आपकी मेहनत बेकार चली जाती है। मेरे अन्दर जो कमी है, वह मुझे बहुत दुःख देती है।"

किसान यह सुनकर मुस्कराया और बड़े प्रेम से बोला,
"तुम्हारी बात सुनकर मुझे दुःख जरूर हुआ, पर तुम जिस बात को अपनी कमी समझ रहे हो, वह असल में एक वरदान है। मैं तुम्हें कल एक बात दिखाता हूँ जिससे तुम्हारी उदासी हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।"

अगले दिन जब किसान पानी भरकर लौट रहा था, तो उसने फूटे हुए घड़े से कहा,
"आज जब हम घर लौटें, तो तुम रास्ते में अपने तरफ ध्यान देना। तुम देखोगे कि तुम्हारी ओर रास्ते भर रंग-बिरंगे, सुंदर और खुशबूदार फूल खिले हैं।"

फूटा हुआ घड़ा रास्ते भर फूलों को देखता रहा—लाल, पीले, नीले, गुलाबी फूल। वह फूलों की सुंदरता में खो गया। उसकी उदासी थोड़ी कम हो गई।

मगर जैसे ही घर पहुँचा और देखा कि उसका आधा पानी फिर गिर चुका है, तो वह फिर मायूस हो गया और बोला,
"मालिक, फूल तो बहुत सुंदर थे पर मेरा काम अधूरा ही रहा। आधा पानी फिर गिर गया।"

किसान मुस्कराया और बोला,
"क्या तुमने गौर किया कि सारे फूल केवल तुम्हारी ही तरफ थे, सही घड़े की ओर नहीं?"

घड़े ने सिर हिलाकर हामी भरी।

किसान बोला,
"क्योंकि मुझे पहले ही पता था कि तुम फूटे हुए हो, इसलिए मैंने तुम्हारी ओर वाले रास्ते पर फूलों के बीज बो दिए थे। रोज़ जब तुम पानी टपकाते थे, तो वही पानी इन बीजों को सींचता था और आज उन्हीं फूलों से मैं अपने घर को सजाता हूँ, भगवान की पूजा करता हूँ। यह सब तुम्हारी ही वजह से संभव हुआ। अगर तुम जैसे हो वैसे न होते, तो यह सुंदरता, यह सौंदर्य कभी नहीं होता।"

फूटा हुआ घड़ा यह सुनकर भावुक हो गया। उसे समझ में आ गया कि हर कमी में भी एक खूबसूरती छिपी होती है – बस उसे देखने का नजरिया चाहिए।

सीख:-
हम सभी में कोई न कोई कमी होती है, पर हर कमी के पीछे भी एक कारण और उपयोग छिपा होता है। यदि हम उसे सही दिशा दें, तो वह भी किसी की ज़िंदगी को खूबसूरत बना सकती है।

चित्रकार : कुमारी लक्षिता सुपुत्री श्रीमती प्रियंका सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

चित्रकार : कुमारी लावण्या सुपुत्री श्री हरीश, एम टी एस

बंदगी

ख़ुद के बारे में इल्तिजा तो रोज़ ही कर लेते है,
आज माँगा ख़ुदा से, तू किसी और की भी सुन ले ।

इस बार तो इल्तिजा भी ना की हमनें,
हमारा ऐतबार ही उस पर भारी गुज़रा ।

ये रात दिन का सिलसिला बर्बाद कर रहा है,
वक्त से परे अब हर पल को महसूस करना है ।

मेरी ही नज़र को सुनाई न दिया,
उसका संगीत उसकी ख़ामोशी में है ।

तबस्सुम नज़र आ रहा है आँखों में हमारी,
इश्क़ क़बूल कर रहा है हमारा, बेख़बर ज़माना ।

हमसे पेश आइये नज़ाकत से,
हमारी रूह को जिस्म देना ख़ुदा भूल गया ।

हर तस्वीर में हम ख़ुद से जुदा लगे,
कौन है जिसके साये में बदल रहें हैं हम ।

जलन हो रही है अपनी ही रंगत से,
बेफिक्री ऐसी भी होती है ।

एक अरसा गुज़र गया हमें ख़ुद को सँवारें हुए,
बिखरे - बिखरे से हम, उसकी रज़ा में नज़र आने लगे ।

-- श्रीमती अमन दीप चट्ठा
माननीय अपर उप-नियंत्रक महालेखापरीक्षक

संगीत

जीवन में खुशियों के जो गीत हैं,
वही तो संगीत है।

ग़म और तन्हाई में जो मीत है,
वही तो संगीत है।

जहाँ संगीत का अनुराग हो,
वहाँ ऐसी अनुभूति होती है,
जैसे दिल हो फूल और शरीर उसका बाग हो।

जब जल के कण उससे मिलते हैं,
तब फूल बाग में ख़िलते हैं,
जब होठों पे प्रेमगीत सजते हैं,
तब दिल, दिल से मिलते हैं।

जब चैन रात में न आए,
बच्चे की निंदिया उड़ जाए,
तब संगीत स्वरों की लोरी से,
आँखे जुड़ती नींद की डोरी से,

शादी, पार्टी सभी कार्यक्रम,
संगीत बिना कुछ नहीं मनोरम,

संगीत बिना है नृत्य कहाँ,
हो जुड़े ही तुम संगीत से,
चाहे रहो यहाँ या रहो वहाँ।

हो जाते भगवान भी खुश,
जब भजन गीत हम गाते हैं,
मन प्रसन्न हो जाता है,
जब सुर और ताल लगाते हैं।।

-- **श्रीमती नेहा कुमारी**
लेखापरीक्षक

नीट परीक्षा : एक मृगमरीचिका

चन्द्र शेखर कु. गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक
9350187968

भाग - 1

नीट अर्थात मेडिकल महाविद्यालय में प्रवेश के लिए तैयारी कैसे करें ? हमारे देश में एक अवधारणा है कि बिना कोचिंग के मेडिकल महाविद्यालय में प्रवेश नहीं मिलता है तथा पढ़ाई पर बहुत ज्यादा खर्च होता है, परंतु ये सभी तथ्य भ्रामक तथा असत्य है। हाँ, यह तथ्य सही है कि मेडिकल महाविद्यालय में सरकारी सीटों की संख्या प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के अनुपात में काफी कम है। इसकी तैयारी हेतु सर्वप्रथम यह ज्ञात होना आवश्यक है कि कितने वर्ष की कड़ी मेहनत की आवश्यकता है तथा बच्चे व उनके अभिभावक को क्या करना होगा तथा क्या त्याग करना पड़ेगा, उसकी चर्चा कर लेनी चाहिए। इस सन्दर्भ में कुछ सामान्य परन्तु अति प्रभावशाली सुझाव इस प्रकार हैं-

1. पूर्ण तैयारी हेतु चार वर्ष की आवश्यकता होगी।
2. अभिभावक को अपनी खुशियों को कम करते हुए त्याग करना होगा।
3. सारे रिश्ते नाते को चार वर्ष तक धीरे धीरे रोकना होगा।
4. बच्चे पर यह दवाब नहीं देना है कि विद्यालय में आपको उच्च स्थान प्राप्त करना है।
5. पर्व-त्योहार, जन्म दिन, विद्यालयी अवकाश, व अन्य उपलक्ष्य को समयानुसार रोकना होगा।
6. मोबाईल पर रील देखना, फेसबुक तथा व्हाट्सऐप से दूरी बनाना आवश्यक है।

अगर आप उपरोक्त तथ्यों से सहमत है तो मेडिकल महाविद्यालय अर्थात नीट प्रवेश परीक्षा हेतु विचार करें क्योंकि यह परीक्षा संघ लोक सेवा आयोग के बाद ऐसी परीक्षा है जो पूर्ण समर्पण माँगती है, ठीक उसी प्रकार जैसे आप ईश्वर व अपने माँ-पिता के प्रति समर्पित होते हैं।

उपरोक्त परिचय के बाद अब असली सफर का शुरुआत करते हैं -

1. जिस समय आपका बच्चा वर्ग 8 को उत्तीर्ण कर वर्ग 9 में जाता है उसी समय से कहानी प्रारंभ होती है अर्थात वर्ग 9 से वर्ग 12 (चार वर्ष), जिसका उल्लेख मैंने पहले ही कर दिया था।

2. वर्ग 9 व वर्ग 10 में बच्चे के बुनियादी आधार को तैयार करना होता है, जिसके लिए आपको निश्चित रूप से कोचिंग की ओर जाना चाहिए परंतु अब आप यह सोचने पर विवश हो जाएंगे कि अभी तो ऊपर पढ़ कर आया कि कोचिंग की आवश्यकता नहीं है । हाँ, यह सत्य है अगर आप स्वयं अपने बच्चे को पढ़ाने में सक्षम हैं या बच्चा स्वयं समझने में समर्थ हो। प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चे को ट्यूशन दिलवाते हैं जिसमें बच्चे का बुनियादी आधार तो तैयार नहीं होता अलबत्ता उसका समय और खराब हो जाता है क्योंकि वर्तमान में ट्यूशन देने वाले प्रत्येक शिक्षक का केवल एक उद्देश्य होता है कि बच्चे को विद्यालय के विषय वस्तु को पढ़ाओ। बच्चे को विषय की अवधारणात्मक समझ देना या प्रतियोगी परीक्षा सम्बंधित दृष्टिकोण प्रदान करना ट्यूशन शिक्षक के उद्देश्य से परे विचार है । वास्तव में ट्यूशन शिक्षक को स्वयं यह जानकारी नहीं होती कि वर्तमान में प्रतियोगिता परीक्षा से संबंधित किस प्रकार के प्रश्न आते हैं या परीक्षा का वास्तविक स्तर क्या है ? परंतु आजकल प्रत्येक महानगर से लेकर छोटे शहरों में यह देखने में आया है कि प्रत्येक गली कूचे में ट्यूशन देने वाले प्राइवेट शिक्षक कुक्कुरमुत्ते (जल में होने वाला एक प्रकार का पौधा) की तरह दिखते हैं, वो स्वयं को प्रत्येक विषय का ज्ञाता बताते हैं जो मानवीय सीमाओं के

लिहाज से बिल्कुल भी संभव नहीं है तथा इस प्रकार वो जाने-अनजाने में आपके बच्चे की ज़िंदगी के साथ खेलते रहते हैं और अभिभावक भी अज्ञानतावश उनकी कठपुतली बन कर रह जाते हैं। वैसे हमारा ऐसा मानना है कि बच्चे को मात्र विद्यालयी शिक्षा के लिए तैयार न करें बल्कि उन्हें प्रतियोगिता परीक्षा के लिए तैयार करें, जिससे बच्चे का भविष्य एवं आगामी जीवन निर्धारित होता है। इसके लिए उचित सुझाव यह है कि विद्यालय के साथ कोचिंग करना भी उचित है क्योंकि कोचिंग में प्रत्येक विषय के लिए अलग शिक्षक होते हैं जोकि अपने विषय में पारंगत होते हैं। प्रत्येक कोचिंग में विषयवार अलग अलग पुस्तकें व महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध रहती है जिसमें NCERT तथा अन्य पुस्तकों का समायोजन होता है, जोकि प्रतियोगिता परीक्षा को ध्यान में रखते हुए तैयार की जाती है। प्रत्येक कोचिंग संस्थान दैनिक अभ्यास (DPP) व साप्ताहिक/अर्धमासिक परीक्षा का आयोजन करता है जिससे आपके बच्चे में प्रतिभागी बनने की इच्छा जागृत होती है। क्या आप ने अपने बच्चे को वर्ग 1 से 8 तक कभी किसी भी विषय के Olympiad परीक्षा में प्रतिभाग कराया है या केवल यह सोचते सोचते ही इतना वक़्त गुज़ार दिया कि काश मेरा बच्चा भी इस प्रकार की परीक्षाओं में शामिल होता, अव्वल आता और समाज में नाम रोशन करता। इसी समस्या के समाधान करने में कोचिंग की याद आती है परन्तु तब तक काफी देर हो चुकी होती है। इतना तो स्पष्ट है कि विद्यालय कभी भी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी नहीं कराता है, उन्हें केवल अपनी विद्यालयी शिक्षा से ही मतलब है तथा शिक्षक को ट्यूशन से मतलब है।

अब यह बताता हूँ कि कोचिंग में कितना खर्च आता है। वैसे तो कोचिंग वाले आपको कुछ भी राशि बताएंगे जो वस्तुतः आपको अनाप-शनाप ही प्रतीत होगी, परंतु आपको उसके कथनानुसार नहीं चलना है । आपको एक मानसिक गणना करनी है, जो कुछ इस प्रकार है- जितनी राशि आपको कोचिंग संस्थान नें बताई है उसमें 40% से 45% तक घटाने के बाद जो आए उसमें ₹ 5000/- से ₹ 6000/- और जोड़ दें । इससे होगा ये कि आपको यह समझ में आ जाएगा कि आपकी गणना से जो राशि प्राप्त हुई है वह आपकी साल भर के ट्यूशन राशि से भी कम है अर्थात ₹ 60000/- तक। यह आपको आश्चर्यजनक लग सकता है परन्तु यह कई बार आजमाया हुआ एवं कारगर नुस्ख़ा है । प्रत्येक कोचिंग संस्थान राशि का निर्धारण शहर और महानगर की भुगतान क्षमता के अनुसार राशि तय करते हैं । अगर आप कोचिंग की ओर नहीं जाना चाहते हैं तो बुनियादी आधार तैयार करने हेतु कुछ किताबों का नाम दे रहा हूँ जो अति-आवश्यक है:-

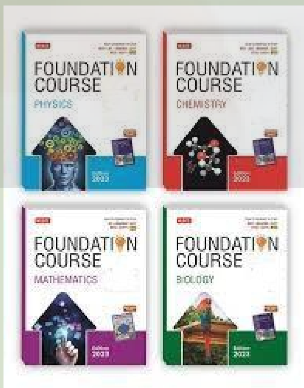

Class 9 & 10 : Foundation Course Physics (MTG Publication)

(a) Foundation Course Chemistry (MTG Publication)

(b) Foundation Course Biology (MTG Publication)

(c) Foundation Course Mathematics (MTG Publication)

(d) Olympiad books (MTG Publication)

(e) Physics by H.C. Verma (Class 9 & 10)

(f) NCERT EXEMPLER

(g) NCERT BOOKS

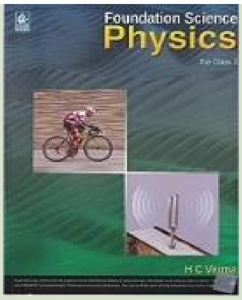

उपरोक्त का पाठन करने के पश्चात अब आगे क्या ?

क्या इतना पर्याप्त है? क्या सफलता का सोपान अभी भी दूर है ?

इन सामान्य जिज्ञासाओं के समाधान के लिए आप सर्वप्रथम अपने बच्चे को यह जानकारी देंगे कि आपको प्रत्येक दिन क्या करना है। प्रत्येक दिन एक नया दिन है, और बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रणनीति भी उसी प्रकार से होगी । सर्वप्रथम विद्यालय से लौटने के बाद विद्यालय का कार्य समाप्त करेंगे तथा इस दौरान आपको यह चिंता नहीं करनी है कि विद्यालय में आप के कितने नंबर आयेंगे, आपकी क्लास रैंक क्या रहेगी । इसके बाद आप प्रत्येक दिन बच्चे को अपने वर्ग से संबंधित किसी भी संस्थान का विडिओ, जो यूट्यूब पर आसानी से उपलब्ध होता है, को निकाल कर दिखायेंगे एवं साथ ही साथ नोट्स भी बनाने के लिए कहेंगे। ध्यान दें, कि 'किसी काम के लिए कहना' और उस पर 'अमल करना' दो अलग अलग बातें हैं । यहाँ पर आपको भी उसी गंभीरता के साथ जुटना है, जैसे आप अपने बच्चे से आशा करते हैं । उसके बाद उसी चैप्टर को NCERT से पढ़ना है। जैसे कि आपको विदित हो कि NCERT की हर लाइन में गहरा अर्थ छुपा होता है इसलिए NCERT पढ़ने में एकाग्रता एवं ध्यान की आवश्यकता का पालन करना होगा । इस प्रक्रिया में अंततः बच्चे के नोट्स व NCERT तैयार हो जाता है। इसके बाद जो पुस्तकें ऊपर बताई गयी हैं, उसके वस्तुनिष्ठ (MCQ) प्रश्न को हल करवाएं। अगर बच्चा सहजतापूर्वक प्रश्न हल करने लगे तो आप समझ सकते हैं कि बुनियादी आधार तैयार होना प्रारंभ हो गया है।

9 वीं और 10 वीं वर्ग में विद्यालय व विद्यालयी कार्य को छोड़कर प्रत्येक दिन 4 से 5 घंटे पढाई की आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए है कि कोई भी चैप्टर का विडिओ लगभग चार से पाँच भाग में विभक्त होता है तथा प्रत्येक विडिओ की समय सीमा लगभग 45 मिनट की होती है जिसे देखने में व साथ में नोट्स लिखने में दोगुना समय लगता है। इससे आप स्वयं समझ सकते है कि एक चैप्टर को खत्म होने में लगभग 7 दिन लग सकता है। यह केवल 9 वीं और 10 वीं वर्ग से संबंधित था।

आपको व आपके बच्चे को साल भर ऐसे ही चलना पड़ेगा, तभी आप मेडिकल में भेजने का विचार लाएं, वरना आप अपना समय भी खराब करेंगे तथा बच्चे की ज़िंदगी से खिलवाड़ करेंगे। अगर आपको यह कोई कहता है कि भाई बच्चे को जहां जाना होगा वहाँ स्वयं ही पहुँच जाएगा तभी आपको यह समझ जाना चाहिए कि वह आपको भ्रमित कर रहा है तथा वह आपका शुभचिंतक नहीं है। ऐसे व्यक्ति स्वयं के बच्चे के बारे में ऐसा नहीं सोचते हैं क्योंकि आज का दौर भीषण प्रतियोगिता का है।

अब इससे आगे अर्थात नीट परीक्षा की तैयारी हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करें।

*****Disclaimer : उपरोक्त पुस्तक से लेखक का किसी भी प्रकार का कोई मौद्रिक लेनदेन या सम्बन्ध नहीं है।***

डर्टी वेलनेस

डर्टी वेलनेस एक नया वैश्विक वेलनेस ट्रेंड है, जिसमें इंसान को धरती और प्रकृति के करीब आने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह ट्रेंड खासतौर पर मेंटल हेल्थ और फिटनेस के लिए उपयोगी माना गया है, जिसमें लोग अपने रोज़मर्रा के जीवन में 'बैक टू बेसिक' (मूलभूत) तरीका अपनाते हैं और प्राकृतिक चीजों जैसे मिट्टी, घास और बागवानी (गार्डनिंग) के ज़रिए हेल्थ सुधारने की कोशिश करते हैं। 2022 के ग्लोबल वेलनेस समिट के मुताबिक, यह दुनिया का सबसे प्रसिद्ध वेलनेस ट्रेंड रहा है । यह ट्रेंड नया नहीं, बल्कि हमारी पुरानी जीवनशैली का पुनरागमन है जिसे अब वेलनेस मार्केट ने अपनाया है।

डर्टी वेलनेस क्या है?

डर्टी वेलनेस का मतलब है मिट्टी से जुड़ाव, बागवानी (गार्डनिंग) करना, नंगे पांव घास अथवा मिट्टी पर चलना या मिट्टी स्नान (मड बाथ) लेना।

यह ट्रेंड मानता है कि हमारे पूर्वज प्रकृति से जुड़े रहते थे, जिससे उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता था। आधुनिकता के साथ हम इस प्राकृतिक जुड़ाव से दूर हो गए हैं, जिससे स्ट्रेस, डिप्रेशन और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ी हैं।

<u>डर्टी वेलनेस के लाभ :-</u>

- मानसिक स्वास्थ्य में सुधार:- कई प्रयोगों (रिसर्च) में पाया गया है कि मिट्टी से जुड़ने, बागवानी (गार्डनिंग) आदि करने से मानसिक तनाव कम होता है और डिप्रेशन जैसी समस्याओं में फायदा मिलता है।

- शारीरिक सेहत:- मिट्टी स्नान (मड बाथ) करने, नंगे पैर घास पर चलने से ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है, चोट या सूजन जल्दी ठीक हो सकती है और दिल की सेहत भी सुधरती है।

- प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी):- मिट्टी के नेचुरल बैक्टीरिया और इकोसिस्टम से जुड़ाव शरीर की इम्यूनिटी बढ़ा सकता है।

- मिट्टी स्नान (मड बाथ) से रक्त संचार (ब्लड सर्कुलेशन), रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी), हार्ट हेल्थ, तनाव कम करने और नींद सुधारने के नतीजे पाए गए हैं।

<u>डर्टी वेलनेस में क्या-क्या किया जाता है?</u>

- बागवानी (गार्डनिंग):- पौधों को लगाना, देखभाल करना, पौधों के बीच समय बिताना।

- मिट्टी स्नान (मड बाथ):- शरीर पर मिट्टी लगाना या मिट्टी से स्नान करना।

- नंगे पैर टहलना:- खासतौर पर सुबह घास या मिट्टी पर बिना चप्पल-जूते के चलना।

- प्राकृतिक वातावरण में समय बिताना:- जंगल या खुले मैदानों में ज्यादा वक्त गुजारना, टहलना।

- परिवार को भी प्रकृति के करीब लाने के छोटे-छोटे प्रयास करें।

क्यों जरूरी है डर्टी वेलनेस?

मानव जीवनशैली में तेज़ी से आयी आधुनिकता और शहरीकरण से हम प्रकृति से दूर हो गए हैं, जिसका असर हमारी मेंटल हेल्थ और फिजिकल हेल्थ दोनों पर पड़ा है। डर्टी वेलनेस इन्हीं समस्याओं से निपटने का प्राकृतिक तरीका है। मिट्टी हमारे इकोसिस्टम की सबसे खास चीज़ मानी जाती है और इंसानों के लिए इससे जुड़ना काफी जरूरी है। डर्टी वेलनेस अपनाकर न सिर्फ आपका तन बल्कि मन भी स्वस्थ रह सकता है, तनाव कम होता है और आप प्रकृति से जुड़कर कुछ पल चैन के बिता सकते हैं।

डर्टी वेलनेस से कैसे जुड़ें?

- हर दिन कम से कम 15-30 मिनट किसी प्राकृतिक जगह पर बिताएं।

- घर के आसपास छोटे-छोटे पौधे लगाएं या टेरारियम बनाएं।

- बच्चे एवं बड़ों सबको साथ मिलकर बागवानी करनी चाहिए।

- जहां संभव हो, नंगे पैर चलें और मिट्टी के संपर्क में आएं।

<u>**ध्यान रखें :-**</u>

शहरीकरण और रसायनों (केमिकल्स) के प्रयोग के कारण बाहर की मिट्टी हमेशा साफ नहीं होती, इसलिए हमेशा स्वच्छ और कम प्रदूषित जगह ही चुनें।

श्रीमती गिन्नी अरोड़ा
सहा. ले. प. अधिकारी /आयकर

"प्रकृति" - हमारी सबसे बड़ी संपत्ति

"प्रकृति" हमारी जीवनरेखा है । प्रकृति हमें हर वो चीज देती है, जिसकी हमें आवश्यकता होती है । हरे - भरे पेड़, रंग बिरंगे फूल, बहती नदियाँ और ऊँचे पहाड़, सब मिलकर धरती को सुंदर बनाते है । प्रकृति न केवल हमें भोजन, पानी और हवा देती है, बल्कि मानसिक शांति और खुशी प्रदान करती है

आज के समय में, मानव अपनी जरूरतों के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है । वनों की कटाई प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण हमारी प्रकृति खतरे मे है । अगर हम इसे अब नही संभालगे, तो आने वाली पीढ़ियों को इसका नुकसान भुगतना पड़ेगा ।

हमें प्रकृति को बचाने के लिए छोटे - छोटे कदम उठाने चाहिए । पेड़ लगाना, पानी बचाना और प्लास्टिक का कम उपयोग करना, हमारे पर्यावरण की रक्षा के लिए जरूरी है । साथ ही, हमें अन्य लोगों को भी प्रकृति के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए ।

प्रकृति हमें बिना कुछ मांगे सब कुछ देती है । यह हमारा कर्तव्य है कि हम इसकी देखभाल करें तथा आने वाले कल के लिए प्रकृति को सुरक्षित एवं संरक्षित करें ।

"आइए, प्रकृति से जुड़ें और इसे सँवारे" !!

श्री हरीश चन्द्र
(एम. टी. एस.)

सावन

सावन आया - सावन आया,
हर्ष उल्लास का मौसम छाया,
टिप - टिप, टिप - टिप बरसा पानी,
सूझ रही है कोई शैतानी,
घन - घन, घन - घन, बादल गरजे,
चमक - चमक देखो बिजली चमके,
पेड़ हवा से लहराते है,
पक्षी देखो चहचहाते है,
मोर ख़ुशी से पंख फैलाता,
नाच - नाच कर वो दिखलाता,
ऐसा मनोहर दृश्य निराला,
मन को कर देता मतवाला,
इस मौसम में चार चाँद लग जाएं,
साथ में चाय - पकौड़े अगर मिल जाए ..!!

-- कुमारी लावण्या
सुपुत्री श्री हरीश चन्द्र (एम टी एस)

ग्रीन हाइड्रोजन समिट 2025
भारत की ऊर्जा क्रांति की ओर एक निर्णायक कदम

भारत स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसी क्रम में **18–19 जुलाई 2025** को **आंध्र प्रदेश के तिरुपति** में आयोजित हुई **"ग्रीन हाइड्रोजन समिट 2025"** ने वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा परिवर्तन के लिए नई दिशा तय की। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री **एन. चंद्रबाबू नायडू** ने किया। यह सम्मेलन आई आई टी **(IIT) तिरुपति**, आई आई एस ई आर **(IISER) तिरुपति**, और **नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय** के संयुक्त प्रयास से आयोजित हुआ।

सम्मेलन का उद्देश्य

ग्रीन हाइड्रोजन समिट का मुख्य उद्देश्य भारत को वैश्विक ग्रीन हाइड्रोजन हब बनाना, अनुसंधान को बढ़ावा देना, नीतिगत समर्थन विकसित करना और उद्योगों को टिकाऊ ऊर्जा समाधानों की ओर प्रेरित करना था। इसमें नीति-निर्माता, वैज्ञानिक, निवेशक, तकनीकी विशेषज्ञ और पर्यावरणविद् शामिल हुए। भारत सरकार द्वारा घोषित **नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन** को गति देने के लिए यह आयोजन बेहद जरूरी माना गया।

क्या है ग्रीन हाइड्रोजन?

ग्रीन हाइड्रोजन एक ऐसा स्वच्छ ईंधन है जिसे **पानी को इलेक्ट्रोलिसिस** प्रक्रिया द्वारा हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित कर प्राप्त किया जाता है, और इस प्रक्रिया में यदि नवीकरणीय ऊर्जा (जैसे सौर या पवन ऊर्जा) का उपयोग किया जाए, तो उसे ग्रीन हाइड्रोजन कहा जाता है। इसका उपयोग औद्योगिक, परिवहन, उर्वरक, स्टील जैसे क्षेत्रों में किया जा सकता है।

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख उद्योग

इस सम्मेलन में देश-विदेश की कई प्रमुख कंपनियों ने भाग लिया, जिनमें **NTPC, BPCL, ACME, KPI Green Hydrogen, Suzlon, Reliance New Energy** और **Yamna Industries** प्रमुख रहीं। इन कंपनियों ने ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण, उपयोग और निर्यात पर अपने विचार साझा किए।

मुख्यमंत्री का दृष्टिकोण

मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि आंध्र प्रदेश को भारत का **"ग्रीन एनर्जी कैपिटल"** बनाने का लक्ष्य है। उन्होंने ग्रीन हाइड्रोजन को पर्यावरण, आर्थिक विकास और ऊर्जा आत्मनिर्भरता की कुंजी बताया। उन्होंने यह भी कहा कि इस क्षेत्र में निवेश से **रोजगार के नए अवसर** खुलेंगे और राज्य को टिकाऊ औद्योगिकीकरण की दिशा में मजबूती मिलेगी।

शोध और शिक्षा संस्थानों की भागीदारी

आई आई टी (IIT) और आई आई एस ई आर (IISER) जैसे संस्थानों ने इस क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों को साझा किया। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि भारत आने वाले 10 वर्षों में ग्रीन हाइड्रोजन तकनीक को पूरी तरह अपनाता है, तो यह न केवल पेट्रोलियम आयात पर निर्भरता कम करेगा, बल्कि वैश्विक जलवायु लक्ष्यों में भी योगदान देगा।

निष्कर्ष

ग्रीन हाइड्रोजन समिट 2025 ने भारत को एक **ऊर्जा-स्वतंत्र और स्वच्छ भविष्य** की दिशा में मजबूत कदम उठाने का अवसर दिया है। इस सम्मेलन से यह स्पष्ट है कि भारत अब केवल ऊर्जा उपभोक्ता नहीं, बल्कि ऊर्जा नवाचार का वैश्विक केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। यदि सरकारी नीति, उद्योग और अनुसंधान मिलकर काम करें, तो भारत जल्द ही ग्रीन हाइड्रोजन में दुनिया का नेतृत्व कर सकता है।

श्रीमती सुभा भारती W/o

श्री संदीप बरनवाल

शौक : सफल जीवन की सीढ़ी

श्री हरीश चन्द्र पाण्डेय
कल्याण सहायक

शौक एक ऐसी गतिविधि या रुचि है जो हमें आनंद और संतुष्टि प्रदान करती है। शौक हमारे जीवन को सुखी और संतुष्ट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शौक के प्रकार:

1. खेल और फिटनेस का शौक: खेल और फिटनेस के शौक हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने में मदद करते हैं। जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, शतरंज, कैरम, बैड-मिंटन, योग, व्यायाम, तैरना एवं जिम आदि।

2. कला और संगीत: कला और संगीत का शौक हमें रचनात्मक और अभिव्यंजक बनने में मदद करते हैं। जैसे पेंटिंग, ड्रॉइंग, गायन, वाद्य यंत्र बजाना एवं ड्राइविंग करना आदि।

3. इंडोर शौक: पढ़ाई और लेखन शौक से हमें ज्ञान और समझ बढ़ाने में मदद मिलती हैं। जैसे पुस्तकें पढ़ना, लेख लिखना, पेंटिंग, ब्लॉगिंग एवं सभी इंडोर खेल खेलना आदि।

4. आउटडोर शौक: यात्रा और साहसिक कार्य का शौक हमें नए अनुभवों और चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं। ट्रेकिंग, कैम्पिंग, यात्रा, खेल आदि हमें प्रकृति के करीब लाते हैं।

5. संग्रह और शिल्प: संग्रह और शिल्प का शौक हमें रचनात्मक और संग्रहणीय वस्तुओं के प्रति रुचि बढ़ाने में मदद करते हैं। जैसे सिक्के/नोट संग्रह, डाक टिकट संग्रह, एंटीक/प्राचीन वस्तुओं का संग्रह, विभिन्न कलाकारों की कृतियों को इकट्ठा करना एवं हस्तशिल्प, चित्रकला, मूर्तिकला एवं फोटोग्राफी करना आदि।

6. सामाजिक शौक: जैसे कि पार्टी में जाना, सामाजिक सेवा करना, सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेना, समाज में सक्रिय रहना, स्वयं सेवा करना, क्लब या समूह में शामिल होना, आदि ये हमें सामाजिक रिश्ते बनाने में मदद करते हैं।

शौक के लाभ:

1. मानसिक स्वास्थ्य: शौक हमारे मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

2. सामाजिक संबंध: शौक हमें नए लोगों से मिलने और सामाजिक संबंध बनाने में मदद करते हैं।

3. व्यक्तिगत विकास: शौक हमें नए कौशल और ज्ञान प्राप्त करने में मदद करते हैं।

4. तनावमुक्ति: शौक हमें तनाव से मुक्ति और आराम का अवसर प्रदान करते हैं।

शौक को कैसे अपनाएं:

1. **अपनी रुचि का पता लगाएं:** अपनी रुचि का पता लगाना और उस पर अपना ध्यान केंद्रित करना।

2. समय निकालें: अपने शौक के लिए समय निकालना और नियमित रूप से उसका अभ्यास करना।

3. नए अनुभवों की तलाश करना: नए अनुभवों की तलाश करके हम अपने शौक को और भी रोचक बना सकते हैं।

4. सामाजिक समर्थन: अपने शौक के लिए सामाजिक समर्थन प्राप्त करके उसे दूसरों के साथ साझा करना चाहिए।

शौक के लिए सुझाव:

1. नियमित रहना: हमें अपने शौक के लिए नियमित रहकर उसका अभ्यास करना चाहिए।

2. नए कौशल सीखना: हमें नए कौशल सीखकर अपने शौक को और भी रोचक बनाना चाहिए।

3. दूसरों के साथ साझा करना: हम अपने शौक को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं। हम अपने शौक दूसरों को ऑनलाईन - फेसबुक, इंस्टाग्राम या ट्विटर, ऑफ़लाईन-क्लब या समूह, कार्यशालाएँ एवं प्रदर्शनी के माध्यम से साझा कर सकते हैं। अपने शौक अन्य व्यक्तियों के साथ साझा करने से हमें नए लोगों से मिलने, सामाजिक समर्थन, सीखने का अवसर मिलता है एवं हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है।

4. आनंद लेना: हमें अपने शौक का आनंद लेना चाहिए और हमें उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। अपने शौक से आनंद लेने से हमें मानसिक स्वास्थ्य, तनावमुक्ति, आत्मविश्वास और जीवन में संतुष्टि प्राप्त होती है।

इस प्रकार, शौक हमारे जीवन को सुखी और संतुष्ट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमें अपने शौक को अपनाने और उसका आनंद लेने के लिए समय निकालना चाहिए। अतः हम सभी को अपने शौक जिंदा रखने चाहिए।

धन्यवाद !!

ऋषिकेश - हरिद्वार सड़क यात्रा

कुमारी अनाया जोशी
सुपुत्री श्री आदित्य जोशी
सहायक पर्यवेक्षक

वर्ष 2024 में घरवालों ने होली का त्यौहार दिल्ली से बाहर मनाने को कहा तो ऋषिकेश-हरिद्वार में माँ गंगा के समक्ष हाज़िरी लगाने का फैसला हुआ और साथ ही यह निर्णय भी लिया गया कि सड़क मार्ग से अपने वाहन से यात्रा की जाये तो दुगना आनंद आएगा । जैसे ही सब ने हामी भरी, हमने होली और उसके साथ होने वाले साप्ताहिक अवकाश का लाभ उठाते हुए तीन दिन का यात्रा कार्यक्रम बना डाला।

हरिद्वार ऋषिकेश में ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान की व्यवस्था करना भी एक आवश्यक कार्य है । सो परमार्थ निकेतन आश्रम को फोन पर संपर्क साधा। उन्होंने भी हामी भर दी । परमार्थ निकेतन में रुकने का लाभ यह है कि आश्रम के दूसरे छोर पर गंगा नदी के दिव्य दर्शन होते हैं, एवं गंगा माँ के दर्शन के लिए कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है । रुकने की जगह निश्चित होते ही हम दिल्ली से हरिद्वार के लिए निकल गए ।

हरिद्वार राजमार्ग भी बहुत अच्छा है और इसलिए पूरी यात्रा में किसी भी तरह की थकान या परेशानी नहीं हुई। 5 घंटो के सुहाने सफर के बाद हम अपने गंतव्य पर पहँचे और थोड़ा सुस्ताने के उपरांत नहाकर गंगा आरती के लिए हर की पौड़ी के लिए निकल पड़े, वहाँ पर अपनी जगह कब्जा कर माँ गंगा के भक्तों की भीड़ में हम भी शामिल हुए । आरती, भजनों और भक्तजनों के साथ कब संध्या काल के सात बज गए, पता ही नहीं चला।

अब समय था पेट पूजा का और फिर निद्रालोक में जाने का। वही किया और अगली सुबह हम निकल गए ऋषिकेश में शिवपुरी की और जहाँ पर रिवर रैफ्टिंग का मन था। थोड़े भाव-ताव के बाद रफ्टिंग के लिए नदी किनारे आ गए और अपने-अपने सुरक्षा-परिधान लेकर नाव में बैठे। फिर अगले दो घंटे एक अविस्मरणीय अनुभव हुआ जिसने 2024 की होली को यादगार बना दिया। रिवर रफ्टिंग हमारे जैसे अनाड़ी लोगों को भी सुखद लगता है।

इसके बाद भूख ज़ोरों से लगी थी तो चोटीवाला भोजनालय की थाली पर टूट पड़े और ठंडी लस्सी से भोजनवकाश की समाप्ति की । अगले कुछ घंटे ऋषिकेश के रामझूला पर व्यतीत किए, संध्या वेला में त्रिवेणीघाट आरती में शामिल हुए और फिर वापस आए, परमार्थ आश्रम हरिद्वार। अगली सुबह हर की पौड़ी पे स्नान कर हम निकल पड़े, अपने निवासस्थान दिल्ली की तरफ़....।

"काफी सारी सुखद यादों को अपनी स्मृति में समेट कर".......!!

"पापा - मेरी सारी दुनियाँ"

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई आदर्श या प्रेरणा के स्रोत होते है, मेरे पापा मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा हैं। वे केवल मेरे पापा ही नही, बल्कि मेरे गुरु, मार्गदर्शक, मेरे मित्र और मेरे सच्चे शुभचिंतक थे। उनका स्वभाव बहुत ही सरल, मिलनसार और प्रेम मे भरा हुआ था। उन्होंने केवल हमें खुशियां दी, चाहे खुद कितनी भी तकलीफ क्यों न हो, उन्होंने हमें कभी उसका अहसास होने नही दिया। उनके होने से दुनिया की हर चीज आसान लगती थी और अब वह उतनी ही कठिन।

उनके साथ होने से हर त्यौहार खुशियों से भरा होता था, और अब वह उतना ही मुश्किल होता है। उनके होने से किसी भी चीज से डर नही लगता था और अब हर पल कोई नया कदम उठाने से पहले डर लगता है। उनके रहते सारे रिश्तेदार अपने थे और अब कोई नहीं पूछता। मुझे याद है, जब मैं छोटी थी और रात को डर जाती थी, तो पापा मुझे अपने पास सुला लेते थे और कहते थे **- "डरो मत, मैं हूँ ना।"** यह एक वाक्य मेरे लिए दुनिया की सबसे बड़ी ताकत थी। इस एक छोटे से वाक्य ने मुझे बहुत हिम्मत दी। आज भी उनकी आवाज़ मेरे कानों में गुँजती है लेकिन अफ़सोस..... अब वह आवाज सुनाई नहीं देती। उनके साथ बिताया हुआ हर एक पल मेरे लिए बहुत अनमोल है जो मैं हमेशा याद रखना चाहती हूँ। कभी-कभी मैं सोचती हूँ, काश समय को पीछे घुमा पाती......... काश फिर से पापा के साथ बाजार जाती, आईसक्रीम खाती, और उनकी हँसी सुन पाती। मेरे पापा भले ही अब हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन उनका आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ हैं। मैं जानती हूँ कि जहाँ भी वे हैं, मुझे देख रहे हैं और मेरी हर सफलता पर गर्व महसूस कर रहे हैं।

"काश........ मैं आपके साथ और वक्त बिता पाती, आपको बता पाती कि आप मेरे लिए क्या थे, और हमेशा रहेंगे........!!"

कुमारी हिमांशी
एम टी एस

जीवन - एक अर्थ

चलते रहो, रुको नहीं,
थक जाओ तो थोड़ी देर बैठ लो।
अंधेरों से डरा नहीं करते,
रात के बाद ही सवेरा होता है।
हर दु:ख की भी एक मियाद है,
हर आँसू के बाद सवेरा होता है।

टूटते हैं सपने जब कभी,
मत सोचो कि सब खत्म हो गया।
वो तो बस इक इम्तिहान है,
ख़ुदा को तुम्हारा हौसला परखना है।

पर उम्मीद का दामन मत छोड़ो,
क्योंकि हर अंधेरे में भी एक रास्ता होता है।।

श्री अनिल कुमार
लेखापरीक्षक

मास्टर विहान सुपुत्र श्री राजेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गंगा : तेरा पानी अमृत

गंगा जल विभिन्न विशेषताओं और महत्व के लिए जाना जाता है। यहाँ गंगा जल की कुछ प्रमुख विशेषताएँ दी गई हैं :-

1. **पवित्रता** : गंगा जल धार्मिक दृष्टि से बहुत पवित्र माना जाता है तथा इसे स्नान, पूजा और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किया जाता है।

2. **आरोग्य गुणत्व** : पारंपरिक भारतीय चिकित्सा (आयुर्वेद) में गंगा जल को शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। इसे कई बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग करने की परंपरा रही है।

3. **खनिज समृद्धि** : गंगा जल विभिन्न खनिजों और पोषक तत्वों से भरपूर होता है, जो नदियों के प्रवाह के साथ धरती से घुलकर उसके जल में मिलते हैं। यह किसानों के लिए कृषि गतिविधियों के लिए सहायक होता है।

4. **जैविक विविधता** : गंगा नदी में विभिन्न प्रकार की मछलियाँ, जलीय जीव, और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। यह कई जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों का घर है।

5. **पुनर्स्थापन गुण** : गंगा जल प्रदूषण के प्रति कुछ हद तक सहनशील होता है और इसमें कुछ तत्वों को स्वच्छ करने की विशेषता भी होती है। हालांकि, मानवीय गतिविधियों के कारण इसे खतरा भी होता है।

6. **सांसारिक और आध्यात्मिक ऊर्जा** : गंगा को "जीवित" नदी माना जाता है, और इसके पानी को आध्यात्मिकता और संतुलन का स्रोत माना जाता है। यह न केवल जीवों के लिए बल्कि संस्कृति और मानवता के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

गंगा की इन विशेषताओं के कारण, यह भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हालांकि, आज के समय में गंगा की सफाई और संरक्षण एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गई है, जिसे विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा संबोधित किया जा रहा है।

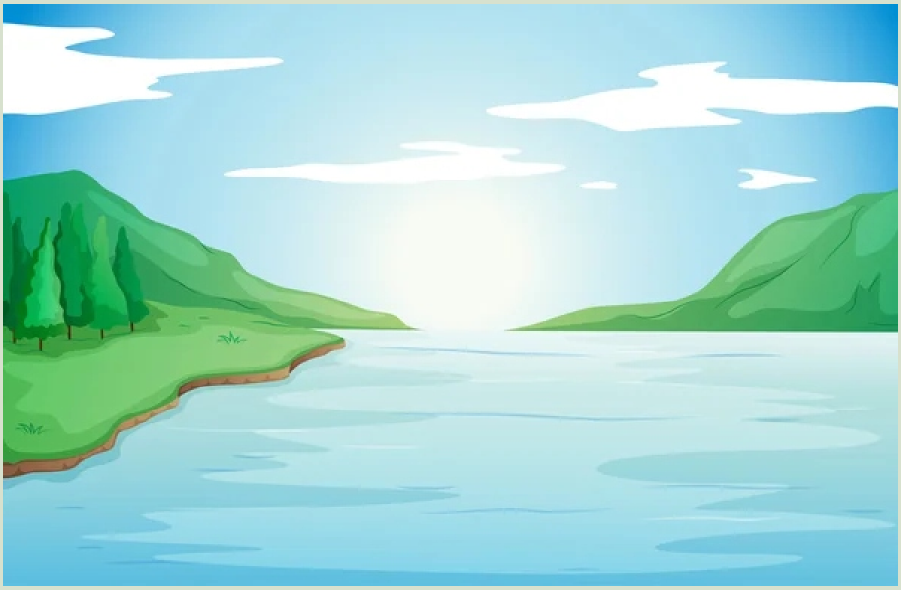

गंगा सफाई अभियान एक बड़ा और महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसका उद्देश गतिशीलता और स्वच्छता को बढ़ावा देना है। यह अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है, जिसका लक्ष्य गंगा नदी को प्रदूषण से मुक्त करना और उसके पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करना है।

मुख्य उद्देश्य :

1. नदी के पानी की गुणवत्ता में सुधार : गंगा के पानी को प्रदूषण मुक्त करना।

2. साफ-सफाई : नदी किनारों और उसके आस-पास के क्षेत्रों की सफाई करना।

3. निष्प्रभावित जलनिकासी : औद्योगिक और घरेलु कचरे को नदी में गिरने से रोकना।

4. जन जागरूकता : नदी की सफाई और उसके महत्व के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाना।

5. ठोस अपशिष्ट प्रबंधन : ठोस कचरों का उचित प्रबंधन करना।

महत्वपूर्ण पहल :

- नेशनल गंगा रिवर बेसिन ऑथोरिटी (NGRBA) का गठन।

- "नमामि गंगे" प्रोजेक्ट : इसमें कई योजनाएं शामिल हैं जैसे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, रिवर फ्रंट डेवलपमेंट, इको टूरिज़्म, आदि।

- स्थानीय समुदाय की भागीदारी : स्थानीय लोगों को इस अभियान में शामिल करना ताकि वे स्वच्छता का ध्यान रखें।

गंगा सफाई अभियान का दीर्घकालिक लक्ष्य गंगा नदी का संरक्षण करना है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका लाभ उठा सकें।

श्रीमती शशि सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

* * * * * * * * * * * *

"मम्मी और पापा"

वो भगवान तो नहीं, मगर किसी भगवान से कम भी तो नहीं हैं,
अब मैं उनकी कीमत ना जान पाऊं, यह दिल इतना नादान भी नहीं है।

होती अगर कोई पीड़ा मुझे, यह उनकी पीड़ा से अलग बिल्कुल भी नहीं है,
सर्दी, गर्मी या हो बरसात, वो कभी भी रुकते थकते नहीं हैं।

ख़ुद पूरे दिन काम करके भी माँ मुझसे कहती है बेटा तू थका तो नहीं है,
आज भी माँ का लाड, प्यार, दुलार, गोद में सर रखकर सोना किसी स्वर्ग से कम तो नहीं है।

पाई-पाई जोड़कर जिन्होंने हर खुशी दी है,
भुला देना उनको इतना आसान तो नहीं है।

खाना अगर ना खाऊं मैं तो उनको भी भाता नहीं है
अपने बेटे - बेटियों की खुशी में उनको अपनी खुशी का पता भी नहीं है।

सीख दी थी उन्होंने की कोई भी ओहदा अच्छे इंसान से बड़ा तो नहीं है,
याद रखूँगी उनकी सारी बातें क्योंकि उनसे बढ़कर कोई और शिक्षक भी नहीं है।

करना पाऊं उनकी ख़ुशियाँ पूरी अगर तो यह जीना, जीना भी तो नहीं है,
वह भगवान तो नहीं मगर किसी भगवान से कम भी नहीं है।

-- कुमारी निधिका मीना
लेखापरीक्षक

स्क्रीन टाइम

क्या है स्क्रीन टाइम?

स्क्रीन टाइम वह समय है जो हम मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप, या टीवी जैसी डिजिटल डिवाइसेज़ की स्क्रीन के सामने बिताते हैं। कोरोना काल के बाद बच्चों समेत बड़ों की लाइफस्टाइल में डिजिटल स्क्रीन का उपयोग काफी बढ़ गया है।

स्क्रीन टाइम के प्रकार :

1. सोशल मीडिया स्क्रीन टाइम: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे कि फेसबुक, इंस्टाग्राम, और ट्विटर पर बिताया गया समय।

2. वर्क स्क्रीन टाइम: काम के लिए कंप्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल डिवाइस पर बिताया गया समय।

3. एंटरटेनमेंट स्क्रीन टाइम: टी.वी., मूवी, या वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स जैसे कि नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और यूट्यूब पर बिताया गया समय।

4. गेमिंग स्क्रीन टाइम: वीडियो गेम्स खेलने में बिताया गया समय।

5. एडुकेशनल स्क्रीन टाइम: ऑनलाइन कोर्स, ट्यूटोरियल या शैक्षिक वीडियो देखने में बिताया गया समय।

स्क्रीन टाइम के दुष्प्रभाव

- आँखों की समस्या : लगातार स्क्रीन देखने से आँखों में दर्द, जलन, थकान, सूखापन, धुंधली दृष्टि और सिरदर्द हो सकता है। बच्चों में जल्दी चश्मा लगने की संभावना बढ़ जाती है।
- नींद में परेशानी : स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी नींद के चक्र को प्रभावित करती है जिससे सोने में कठिनाई आती है।
- मानसिक स्वास्थ्य पर असर : अधिक समय स्क्रीन के सामने बिताने से चिंता, तनाव, अवसाद जैसी समस्याएं हो सकती हैं। बच्चों में ध्यान केंद्रित करने में कमी आती है।
- शारीरिक गतिशीलता कम होना : ज्यादा स्क्रीन टाइम से बच्चे शारीरिक रूप से कम सक्रिय रहते हैं और मोटापे के शिकार हो सकते हैं।
- सामाजिक एवं शैक्षिक विकास में रुकावट : स्क्रीन के ज्यादा इस्तेमाल से बच्चों के सामाजिक कौशल, भाषा विकास और अकादमिक प्रदर्शन पर बुरा असर पड़ सकता है।
- व्यवहारिक समस्याएं : स्क्रीन के प्रति लत के चलते बच्चों में चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट और आक्रामकता बढ़ सकती है।

बच्चों के लिए कितना स्क्रीन टाइम है सही?

WHO और विशेषज्ञों की राय के अनुसार, उम्र के अनुसार स्क्रीन टाइम की सीमा तय की गई है।

आयु सुरक्षित स्क्रीन टाइम

2 साल से कम बिल्कुल नहीं/बहुत जरूरी हो तभी

3-7 साल 0.5-1 घंटा/दिन

7-12 साल 1 घंटा/दिन

12-15 साल 1.5 घंटे/दिन

16+ 2 घंटे तक/दिन

भारत में हाल की स्टडी के अनुसार, 5 साल से कम उम्र के बच्चे औसतन 2.2 घंटे/दिन स्क्रीन पर बिता रहे हैं, जो अनुशंसित सीमा से दोगुना है–यह चिंता का विषय है।

स्क्रीन टाइम कम करने के उपाय

- टेक-फ्री जोन बनाएं–घर में कुछ जगह जैसे डाइनिंग टेबल या बच्चों की पढ़ाई की जगह पर फोन, टैबलेट न रखें।

- बच्चों के लिए समय सीमा तय करें–कितना समय वे स्क्रीन पर बिता सकते हैं, इसे निर्धारित करें।
- ऑफलाइन खेल और गतिविधियों को बढ़ावा दें–बच्चों के साथ समय बिताएं, शारीरिक खेल-कूद या रचनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।
- रोल मॉडल बने–पेरेंट्स खुद भी स्क्रीन टाइम कम करें ताकि बच्चे उनसे सीखें।
- स्क्रीन का उपयोग शिक्षा व रचनात्मक कार्यों के लिए ही करें; मनोरंजन के लिए सीमित समय दें।

निष्कर्ष

बहुत अधिक स्क्रीन टाइम बच्चों और बड़ों के लिए कई शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समस्याओं का कारण बन सकता है। जरूरी है कि जागरूक रहकर स्क्रीन उपयोग की सीमा तय करें और संतुलन बनाए रखें।

श्री ऋषि आहूजा H/o
श्रीमती गिन्नी अरोड़ा
सहा.ले.प.अधिकारी / आयकर

भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव

भूमिका :-

भारत विविधताओं का देश है - यहाँ भाषा, धर्म, संस्कृति और परंपराओं में असंख्य रंग समाए हैं। लेकिन इस विविधता के साथ-साथ भारत में सामाजिक व्यवस्था में एक ऐसी परंपरा भी रही है, जिसने समाज को लंबे समय तक विभाजित रखा है - वह है जातिगत भेदभाव। जाति व्यवस्था, जो कभी कर्म और गुण के आधार पर बनी थी, समय के साथ सामाजिक भेदभाव और शोषण का माध्यम बन गई।
आज भी, आधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में, जातिगत भेदभाव हमारे समाज के ताने-बाने में गहराई से जुड़ा हुआ है। यह न केवल सामाजिक समानता में बाधा है, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक विकास में भी अवरोध उत्पन्न करता है।

जाति व्यवस्था का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हैं। प्रारंभ में, वर्ण व्यवस्था चार वर्गों में विभाजित थी – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह विभाजन कर्म और गुणों के आधार पर माना जाता था।
किन्तु समय के साथ यह व्यवस्था जन्म-आधारित हो गई। इसके साथ ही समाज में ऊँच-नीच, छुआछूत और भेदभाव जैसी कुरीतियाँ जन्म लेने लगीं। जिन जातियों को 'निम्न' माना गया, उन्हें समाज में अपमानित किया गया, उनके अधिकार छीने गए और वे आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़ते गए।

जातिगत भेदभाव के आधुनिक स्वरूप

1. सामाजिक भेदभाव

आज भी भारत के कई हिस्सों में निम्न जाति के लोगों के साथ सामाजिक दूरी बनाई जाती है। कुछ गाँवों में खासकर यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है जहाँ दलितों को मंदिरों में प्रवेश से रोका जाता है, सार्वजनिक कुओं का उपयोग नहीं करने दिया जाता और उन्हें शादी-ब्याह व सामाजिक आयोजनों में हाशिए पर रखा जाता है।

2. आर्थिक भेदभाव

जाति के आधार पर सामाजिक भेदभाव आर्थिक अवसरों को भी प्रभावित करता है। दलितों और पिछड़ी जातियों को नौकरियों में अवसर कम मिलते हैं। भूमिहीनता, गरीबी और श्रमिक वर्ग में अधिक संख्या में उनकी भागीदारी इस असमानता का प्रमाण है।

3. शैक्षिक असमानता

देश के कई गाँवो में आज भी शिक्षा में जातिगत भेदभाव देखा जाता है। भले ही आरक्षण व्यवस्था लागू है, लेकिन सरकारी स्कूलों और उच्च शिक्षण संस्थानों में दलित और पिछड़ी जातियों के विद्यार्थियों के साथ भेदभाव की खबरें समय-समय पर आती रहती हैं।

जातिगत भेदभाव का प्रभाव

1. सामाजिक असमानता

जातिगत भेदभाव ने भारतीय समाज के कुछ वर्गों के मध्य एक गहरी खाई सी पैदा कर दी है । इससे समाज में भाईचारा, समानता और एकता की भावना को ठेस पहुंची है।

2. मानवाधिकारों का हनन

कुछ जातियों के साथ होने वाले अत्याचार, हिंसा और उनके अधिकारों का हनन मानवाधिकारों के उल्लंघन के रूप में सामने आता है।

3. आर्थिक पिछड़ापन

जातिगत भेदभाव के कारण कुछ क्षेत्रों में ऐसा प्रतीत होता है कि दलित और पिछड़ी जातियाँ मुख्यधारा से कट गईं, जिससे उनका आर्थिक विकास अवरुद्ध हुआ। आज भी भारत में अधिकांश गरीब और अशिक्षित लोग इन्हीं जातियों से आते हैं।

4. सामाजिक विद्रोह और आंदोलन

जातिगत भेदभाव ने विभिन्न सामाजिक आंदोलनों को जन्म दिया है। डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में दलित अधिकार आंदोलन, पिछड़ी जातियों के आरक्षण आंदोलन और हाल के वर्षों में दलित उत्पीड़न के खिलाफ प्रदर्शन इसके उदाहरण हैं।

जातिगत भेदभाव के विरुद्ध कानूनी प्रयास

भारत के संविधान ने जातिगत भेदभाव के खिलाफ कई प्रावधान किए हैं –

- अनुच्छेद 15: धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करता है।
- अनुच्छेद 17: छुआछूत को समाप्त करता है और इसे कानूनन अपराध मानता है।
- अनुच्छेद 46: अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के आर्थिक और शैक्षिक हितों की रक्षा करता है।
- SC/ST अत्याचार निवारण अधिनियम (1989): अनुसूचित जातियों और जनजातियों के खिलाफ होने वाले अपराधों को रोकने के लिए बनाया गया है।

आरक्षण नीति और उसका प्रभाव :-

जातिगत भेदभाव को समाप्त करने और समाज में समान अवसर प्रदान करने के लिए आरक्षण नीति लागू की गई। शिक्षा, सरकारी नौकरियों और राजनीति में आरक्षण ने वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया है।

सकारात्मक पक्ष :-

- वंचित जातियों के लोगों को शिक्षा और नौकरी के अवसर मिले।
- दलित और पिछड़ी जातियों में सामाजिक जागरूकता बढ़ी।
- राजनीति में दलित नेतृत्व उभरा।

नकारात्मक पक्ष :-

- आरक्षण के दुरुपयोग की घटनाएँ
- जाति आधारित राजनीति को बढ़ावा
- योग्यता और प्रतिभा के साथ समझौते की बहस

जातिगत भेदभाव के विरुद्ध सामाजिक प्रयास

कानूनी उपायों के साथ-साथ समाज में जागरूकता फैलाने और जातिगत भेदभाव समाप्त करने के लिए अनेक सामाजिक संगठनों ने कार्य किया है –

- भीमराव अंबेडकर के सामाजिक सुधार आंदोलन
- महात्मा गांधी का हरिजन आंदोलन
- दलित साहित्य आंदोलन
- एनजीओ द्वारा शिक्षा और मानवाधिकार जागरूकता

वर्तमान समय में जातिगत भेदभाव की स्थिति :-

आज भारत के शहरी क्षेत्रों में जातिगत भेदभाव में कमी हुई है, लेकिन यह पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। कुछ गाँवों और छोटे कस्बों में जातिगत भेदभाव अब भी सामाजिक जीवन का हिस्सा है।

ऑनलाइन शिक्षा, वैश्वीकरण और सूचना क्रांति ने सामाजिक चेतना को बढ़ाया है, जिससे नई पीढ़ी में जातिगत भेदभाव के विरुद्ध सोच विकसित हो रही है। फिर भी, सामाजिक सोच में बदलाव लाने के लिए लम्बा रास्ता तय करना शेष है।

जातिगत भेदभाव समाप्त करने के उपाय :-

1. शिक्षा और जागरूकता

शिक्षा ही जातिगत भेदभाव के उन्मूलन की सबसे प्रभावी कुंजी है। नैतिक शिक्षा, सामाजिक समानता के संदेश और संवेदनशीलता का विकास आवश्यक है।

2. सामाजिक संवाद और समरसता

विभिन्न जातियों के बीच संवाद और सामाजिक मेलजोल से भेदभाव को कम किया जा सकता है।

3. मीडिया और साहित्य की भूमिका

मीडिया, सिनेमा, और साहित्य जातिगत भेदभाव के खिलाफ जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

4. कठोर कानूनी कार्यवाही

जातिगत अत्याचारों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई से भेदभाव को हतोत्साहित किया जा सकता है।

5. राजनीति में जातिवाद का बहिष्कार

जाति आधारित राजनीति पर रोक और विकास आधारित राजनीति को बढ़ावा देना आवश्यक है।

उपसंहार :-

जातिगत भेदभाव भारतीय समाज में एक गहरी जड़ें जमाई हुई समस्या है। हालाँकि, संविधानिक प्रावधान, कानूनी प्रयास और सामाजिक आंदोलनों ने इसके विरुद्ध संघर्ष किया है, फिर भी यह समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई है।

समाज में समरसता, भाईचारा और समानता तभी स्थापित हो सकेगी, जब जातिगत भेदभाव को केवल कानूनी स्तर पर ही नहीं, बल्कि मानसिकता के स्तर पर समाप्त किया जाएगा।

"जब हर व्यक्ति को उसकी योग्यता, मानवता और अधिकार के आधार पर सम्मान मिलेगा, तभी भारत वास्तव में एक समानता आधारित समाज बन पाएगा।"

श्री सौरभ मीणा
लेखापरीक्षक

घर जाना ख्वाब लगता है

तब घर अपना हमने छोड़ दिया,
जब सपनों की तरफ रुख मोड़ लिया ।

छोड़ के घर आ गए शहर,
मां-बाप को चिंता अब हर पहर ।

सही काम, अच्छा वेतन भी मिले ।
भेजे पैसे घर तो चेहरे भी खिले ।

मेहनत अपनी मैं बढ़ाऊगाँ,
और पैसे खूब कमाऊगाँ ।

जाने क्यों यह लगता था ?
कि घर से दूर ही सपना बसता था ।

एक छोटा सा कमरा दूर शहर का,
पड़ाव है यह सपनों की डगर का ।

कुछ दिन इसमें रह लेंगे,
भरपूर मेहनत कर लेंगे,

फिर मेहनत के रंग बिखरेंगे,
और सुंदर सा एक घर लेंगे ।

काम मन से करता मैं गया,
लगभग सबकुछ मिलता ही गया,

जो चाहा वो खाया और पहना,
माँ को भी दिला दिया कुछ गहना ।

पापा को भी पैसे देता हूं,
मैं उनका अच्छा बेटा हूं ।

है अच्छी तनख्वाह,
सबकुछ ले ही लिया ।

वह कमरा है छोड़ दिया,
सुंदर सा एक घर भी लिया ।

पर छूट गई अब वो गलियाँ,
जहाँ खिलती थी मन की कलियाँ,

यह घर मकान बस लगता है,
घर तो दूर गाँव में बसता है।

क्या सच में सपने थे यही मेरे ?
या बस जरूरतों ने ही थे घेरे ?

मन घर जाने को तरसता है,
पर काम की इतनी व्यस्तता है,
त्यौहारों पर ये दिल रोता है,
फोन की गैलरी में यादें संजोता है ।

अब छूट गया है मेरा घर,
बस सपनों में आता है नजर,

यह शहर ख़राब अब लगता है,
घर जाना ख़्वाब अब लगता है ।।

श्रीमती नेहा कुमारी
लेखा परीक्षक

चलो नया सवेरा ढूंढें

चलो नया सवेरा ढूंढें,
उम्मीदों का बसेरा ढूंढें।
थकी हुई इन साँसों को,
एक ताज़ा सवेरा ढूंढें।

धूप बुनती है सुनहरी किरणें,
छांव में हैं कितनी कहानियाँ।
हर कदम पे है एक राह नई,
हर मोड़ पे नई निशानियाँ।

बीत गया जो कल का अंधेरा,
अब न उससे डरना है।
जो टूटी थीं ख्वाहिशें पहले,
अब फिर से उन्हें बुनना है।

मन में रख विश्वास की जोत,
हर हार को जीत बना लेंगे।
है सफ़र लंबा तो क्या हुआ,
हम थक कर भी चल देंगे।

चलो न कुछ अच्छा सोचें,
चलो न खुद से बातें करें।
इस जीवन की पगडंडियों पर,
खुशियों की बरसातें करें।

**श्रीमती सुभा भारती W/o
श्री संदीप बरनवाल, ले.प.**

मेरे पापा

मेरा बचपन से सपना है,

की मुझ पर नाज़ हो तुझको।

है तेरा शुकियाँ कहना जो बिन मांगे दिया तूने।

भरोसा भी, मोहब्बत भी - बहुत मुझ पर

किया तूने।

तेरी आँखो, तेरे चहरे पर दिखता है ख़ुदा मुझको।

मेरा बचपन से सपना है,

की मुझ पर नाज़ हो तुझको।

नहीं मुश्किल यहाँ कुछ भी, मुझे ऐसा बताया था।

मैं कल खुद से बनूँ बेहतर, ये तूने ही सिखाया था।

मुझे उड़ना सिखाया और गिरु तो थामना मुझको

मेरा बचपन से सपना है,

की मुझ पर नाज़ हो तुझको !!

कुमारी हिमांशी
एम टी एस

बस हिम्मत कर बढ़ते रहना

जब पांव तुम्हारें रुक जाये,
आँखों में आँसू भर जाये,
मंजिल की सारी उम्मीदें,
दिल में आग उठे और जल जाये,

संग्राम अगर हारे भी तो,
सेना साधन वारे भी तो,
तुम मन को छोटा मत करना,
बस आगे तुम बढ़ते चलना,

जब कहने वाले कहते हो,
जब रक्त पार से बढ़ते हो,
सब ओर निराशा छाई हो,
असफलता हो तन्हाई हो,

बस हिम्मत कर बढ़ते रहना ।

सारा सब कुछ बर्बाद रहे,
बस पीड़ा ही आबाद रहे,
दुनिया तुमको समझाएगी,
चलते पथ से भटकाएगी,

फिर भी अपने मन की करना,
ज़िद करते थे करते रहना,
तुम हिम्मत कर चलते रहना ।

आराम नहीं अपना आसन,
लड़ना ही है जय का साधन,
लहरों से न पतवार डर ।

तूफान का रस्ता मोडेंगे,
मौजों की बाँह मरोड़ेंगे,
आगे नस्ले दुहराएगी,
इक दिन तो वो भी आएगी,

जब सारे गम धुल जाएंगे,
ये निंदा करने वाले ही,
तब जय जयकार लगाएंगे ।

इस जीत - हार की दौड़ से,
तुमको आगे बढ़ना, बढ़ते रहना,
बस हिम्मत कर चलते रहना !!

श्रीमती चंचल कुमारी W/o
श्री प्रमोद कुमार आर्य,
स.ले.प.अ.

सेवानिवृत्तियां

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
1	सुश्री आशा सेठ	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.10.2024
2	श्री नरेश कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.11.2024
3	श्री सुशील कुमार जायसवाल	महानिदेशक	31.12.2024
4	श्री देवेंदर कुमार	पर्यवेक्षक	31.12.2024
5	सुश्री पूनम सक्सेना	पर्यवेक्षक	31.01.2025
6	पं. श्री रतन लाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2025
7	श्री सुरेश कुमार	लेखापरीक्षक	31.05.2025
8	श्री दया सागर राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2025
9	सुश्री गौरी शिवरामन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2025

श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री लखमी सिंह, पर्यवेक्षक' की दिवंगत आत्मा की शांति एवं मोक्ष के लिए परमात्मा से विनम्र प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते है !

भारत मंडपम, नई दिल्ली

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली - 110002